।। श्री सुरभ्यै नमः।।

वेदलक्षणा
श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा

मासिक

कामधेनु कल्याण पत्रिका

फरवरी 2026

अभिनव ब्रजमण्डल श्री मनोरमा गोलोकतीर्थ नंदगांव, केसुआ तह. रेवदर सिरोही

वर्ष: 02 Website:-www.godhampathmeda.org Email :- K.k.p.pathmeda@gmail.com अंक: 11

हे मेरे भारत के शासकों!

समय निकल रहा है, आपसे गोसेवा कब होगी? यह भारत भूमि अवतारों, देवताओं, ऋषियों, साधु संतों और कई बड़े–बड़े चक्रवर्ती राजाओं की कर्म भूमि रही है। इन सबने इस धरा पर वेदलक्षणा गाय की शरण लेकर और उसकी सेवा करके ही यश पाया है।

हे भारत के शासकों! गोमाता को मत भूलना, वरना राम भी साथ नहीं देंगे। राम और श्याम को पहचानो। जो गाय को अपना इष्ट मानते थे, वे राम और श्याम थे। गाय से मुंह मोड़ लिया तो राम और श्याम रूठ जायेंगे। बिना गोभक्त हुए कोई राम का नहीं हो सकता। वेदलक्षणा गाय इस धरा पर सबका हित करने वाली भगवान की जीती जागती मूर्ति है, आप अगर उसके नहीं हो सकोगे तो राम और श्याम के क्या हो सकोगे? राम के हो गये हैं यह केवल आपके मन का छलावा है। सावधान हो जाओ बिना गाय वाले राम और श्याम के भक्तों, राम के गुरु की नंदिनी को नहीं बचा पाए तो राम तुम्हारे लिए खाली नहीं बैठे हैं।

हे भारत के शासकों! गो के साथ द्रोह से आज तक कोई नहीं बच पाया है। आप इतिहास को देख लो, राजा सहस्रबाहु, राजा सत्यव्रत, आठ वसु, मनु के पुत्र प्रिषध्र, राजा विश्वामित्र, अहिल्याबाई के पुत्र मालेराव आदि की कथाएं तो आपने अवश्य पढ़ी–सुनी होगी कि गो का अपराध करने वालों की क्या गति हुई? गाय राम और श्याम की इष्ट है। राम अपने द्रोही को शरण आने पर एक बार क्षमा भी कर सकते हैं, मगर गाय के साथ अपराध करने वाले को अवश्य दण्ड देते हैं। राम अपने उपेक्षक को सहन कर सकते हैं, मगर गाय का उपेक्षक राम के लिये असहनीय है। इसलिये जो गाय का है, वही राम का है।

हे भारत के शासकों! गो का श्राप मत लो। आप क्यों देश को बर्बाद कर रहे हो। गौहत्या का पाप राजा और प्रजा सबको लील जायेगा। हे शासकों! क्यों तुमसे गो की रक्षा और सेवा नहीं होती? आपके मन में गौसेवा के भाव क्यों नहीं हैं? सत्ता पाकर क्यों गोमाता को भुला देते हो? क्या आप गोमाता की सेवा का कोई रास्ता नहीं जानते? सब जानते हो, लेकिन गाय को गिनते नहीं हो, गाय को कुछ नहीं समझते हो।

हे भारत के शासकों! अवसर हाथ से जा रहा है। समय चला भी जाता है और न्याय भी करता है। राजा धरती पर ईश्वर का प्रतिनिधि होता है। ईश्वर ने आपको मेरे गोवंश की सेवा करने के लिये सामर्थ्य दिया है, गोहत्या देखने के लिये नहीं। हे शासकों, शीघ्र ही गोसेवा में लगकर अपना और इस राष्ट्र का मंगल करो, यही मेरी सद इच्छा है आपसे।

आपकी अपनी प्यारी माँ सुरभि

।। वन्दे धेनुमातरम् ।।

यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत् स्थावरजंगमम्। तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम् ।।

वर्ष:2

कामधेनु-कल्याण

अंक: 11

माघ मास शुक्लपक्ष वि.सं. 2082 रा.शा: 1947 फरवरी–2026

1.	**प्रार्थना क्या है** – परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानन्दजी महाराज	04
2.	**श्री कामधेनु कृपा प्रसाद** – परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानन्दजी महाराज	06
3.	**ठाकुरजी कब आओगे** – भगवत प्रेरणा से	09
4.	**माँ** – परम् श्रद्धेय स्वामी श्री रामसुखदासजी महाराज	11
5.	**श्रीमदभागवत कथा** – पू. द्वाराचार्य महंत स्वामी श्री राजेन्द्रदासजी महाराज	12
6.	**गो सावित्री स्त्रोतम्** – महाभारत से संकलित	14
7.	**श्री राम कथा** – पू. आचार्य श्री दयानंद शास्त्री जी महाराज	16
8.	**श्री शिव महापुराण कथा** – पू. गोवत्स श्री राधाकृष्ण जी महाराज	18
9.	**गोसेवक अपने कर्त्तव्यपालन की समीक्षा स्वयं करें**- पू. गोवत्स श्री राधाकृष्ण जी महाराज	20
9.	**परमपद (जीव का अपना असली घर)** – साभार 'साधक संजीवनी'	24
10.	**जाऊँ तो जाऊँ कहाँ** – सम्पादक, अम्बा लाल सुथार	25
11.	**संस्था समाचार**- जनवरी माह में हुए विभिन्न घटनाक्रमों का संक्षिप्त विवरण	26
12.	**गोमूत्र के बिना आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति अधूरी है**- संकलित	34

गाय बिना गति नहीं

वेद बिना मति नहीं

संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक : परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानन्द जी महाराज

Web: www.godhampathmeda.org

Email : k.k.p.pathmeda@gmail.com

सम्पादकीय पता

श्री गोधाम महातीर्थ आनन्दवन-पथमेड़ा,

त.-सांचोर, जि.-जालोर (राज.) 343041

Mob. No. 9828052638

k.k.p.pathmeda@gmail.com

सम्पादक

अम्बा लाल सुथार

10 वर्षीय सदस्यता शुल्क–2100 रुपये मात्र

मूल्य:20 रुपये

श्री कामधेनु कृपा प्रसाद

(परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज)

प्रार्थना क्या है?

पिछले अंक से आगे......मिली हुई कोई भी वस्तु हमारी नहीं है और न कोई भी वस्तु हम हैं, अपितु दी हुई वस्तु का उपयोग करने में ही हमारा अधिकार है। इसी को ही कर्तव्यनिष्ठ प्राणी कर्तव्य के नाम से कहते हैं, धर्मात्मा इसे धर्म के नाम से कहते हैं। केवल मान्यता का भेद है, अर्थ का कोई भेद नहीं है। मिली हुई वस्तु, सामर्थ्य और योग्यता पर अर्थात् दूसरों की सेवा के लिए है अपने लिए नहीं है। इसी को कर्तव्य कहो, यज्ञ कहो, चाहे इसे धर्म कहो कोई अंतर नहीं पड़ता। इससे यह सिद्ध होता है कि जो वस्तु, सामर्थ्य, योग्यता हमें प्राप्त हैं उसका उपयोग हमें अपने विवेक के अधीन करना है अथवा यूं कहो कि उस मिले हुए विवेक के प्रकाश में हमें मिले हुए सामर्थ्य का सदुपयोग करना है।

परन्तु आप जानते हैं कि ऐसा कौन व्यक्ति है जो असमर्थता का अनुभव नहीं करता? ऐसा कौन व्यक्ति है जिसके सामने मृत्यु का भय नहीं है? ऐसा कौन व्यक्ति है जिससे कभी विवेक का विरोध ना हुआ हो? मानना ही पड़ेगा हमारे आपके सामने ये तीनों ही समस्याएं हैं- मृत्यु का भय है, सामर्थ्य की मांग है और पवित्र होने की आवश्यकता है। इन तीन दुर्बलताओं को सामने रखकर जब हम सोचते हैं तो इस बात के लिए विवश हो जाते हैं कि जिससे हमारी उत्पत्ति हुई है, जो हमारा अपना है, जिससे हमारा नित्य संबंध है उसके सामने अपनी आवश्यकता को प्रकट करें। किसलिए? इसलिए नहीं कि वे हमारी आवश्यकता को जानते नहीं है, इसलिये प्रकट करना है कि हम स्वयं अपनी आवश्यकता को भूलकर कामनाओं के जाल में फंस गए थे। इस दृष्टि से यदि आप और हम विचार करेंगे तो हमको मानना पड़ेगा कि आज जीवन का सबसे पहला प्रश्न हम अपनी आवश्यकता को जानें, हम क्या चाहते हैं, इस बात को ठीक-ठीक समझना, यह जीवन का सबसे पहला प्रश्न है।

आप सोचें, मांगने का सबसे पहला अधिकार किसको होता है? जिसको आवश्यकता है वो ही तो मांगता है। जैसे कि भूख लगने पर भोजन का मांगना, प्यास लगते ही पानी का मांगना और जिसके सामने मांगना है वह कोई अप्राप्त तो है नहीं, वह तो प्राप्त है, क्योंकि इससे हमारी उत्पत्ति हुई है। यदि वह ना हो तो हमारी उत्पत्ति ही सिद्ध नहीं होगी और हमारी स्थिति भी सिद्ध नहीं होगी। वह हमारे साथ है और सदासर्वदा साथ है। ऐसा कोई क्षण नहीं है जब वह हमारे साथ न हो। कौन? कौन हमारे साथ न हो? भगवान। ऐसा कोई क्षण नहीं है, ऐसा कोई समय नहीं है, ऐसा कोई स्थान नहीं है जब भगवान हमारे साथ न हो।

देश काल विस विदेस माहीं,
कहो सो अस कहँ जहँ प्रभु नाहिं।
पूछेहु मोहि कि रहौं कहँ, मैं पूँछत सकुचाउँ।
जहँ न होहु तहँ देहु कहि तुम्हहि देखावौं ठाउँ।।

बताओ ऐसा कौनसा स्थान है, कौनसा समय है, जहाँ प्रभु नहीं हो। वह सदा हमारे साथ हैं, सदैव हमारे साथ हैं। परन्तु हम इस बात को इतना भूल गए हैं कि अपने को अनाथ अनुभव करने लगे। वास्तव में हम अनाथ नहीं हैं। उनके साथ रहते हुए, सर्वसमर्थ ईश्वर के साथ रहते हुए हम अनाथ कैसे हो सकते हैं? हम उनसे विमुख हो गए, इसलिए अनाथ हुए।

हमारे वह साथ है यह बात हम भूल गए, इसलिए हम अनाथ हुए, इसलिए हमें मृत्यु से भय लगने लगा, इसलिए हम असमर्थ हुए, इसलिए हम दोषग्रस्त हुए, इसलिए हम विकारग्रस्त हुए। इसलिए भाई उपयुक्त प्रार्थना में पहला वाक्य है- मेरे नाथ! 'मेरे नाथ' कहते ही एक आत्मीयता की, नित्य संबंध की स्थिति हो जाती है। आप विचार करो आत्मीयता में प्रियता स्वाभाविक है और जब हम जानते हैं कि हमारा नाथ समर्थ और रक्षक है तो चिंता और भय के लिए कोई स्थान नहीं है जीवन में। न किसी प्रकार का संकोच रह जाता है, न भय रह जाता है और न ही चिंता रह जाती है। क्यों? क्योंकि सर्वसमर्थ परमात्मा, अपने प्रभु सदासर्वदा अपने साथ है।

अब यह भी विचार करना है कि जिससे हमें मांगना है उसकी महिमा क्या है? उसमें हमारी श्रद्धा है या नहीं है? हम उस पर विश्वास करते हैं या नहीं करते हैं? तो भाई प्रार्थी तो कोई ऐसा नहीं होता है जो उस पर विश्वास न करें जिससे प्रार्थना कर रहा है। प्रार्थना उसी से करते हैं जिस पर विश्वास हो कि वह मेरी प्रार्थना को पूरी करेगा। विश्वास न हो तो प्रार्थना कर ही नहीं सकते। उसकी महिमा न माने तो भी प्रार्थना नहीं कर सकते चाहे वह अपनी वाणी के द्वारा उसकी महिमा को प्रकट न करें, चाहे वह वाणी के द्वारा न कहे कि आप ऐसे हैं, आप वैसे हैं। परंतु उसके जीवन में यह बात स्वभाव से होती है।

यह बात भी है कि वह जिससे मांगता है उसके बारे में उसके भीतर यह पक्का विश्वास होता है कि जो मैं मांग रहा हूँ वह वस्तु वे दे सकते हैं अथवा मेरी जो मांग है उसको वे पूरी कर सकते हैं। तभी तो मांगता है। जब हम मांगते हैं, किसी से मांगते हैं तो जिससे मांगते हैं उसको अलग नहीं कह सकते, उसको अलहदा नहीं कह सकते, उसको यह नहीं कह सकते कि वह अपना नहीं है। अत: प्रार्थना का उदय होना ही इस बात को सिद्ध करता है कि जिससे हम प्रार्थना कर रहे हैं वह अपना ही है और हमारी मांग पूरी करने में समर्थ है।

अब विचार यह करें कि समर्थ से, उस अपने से हम क्या मांगे? जो हमारे सर्वसमर्थ प्रभु हैं, जो अपने प्रभु हैं उनसे हम क्या मांगे? अभी जो हमने प्रार्थना की उसमें उसकी महिमा के संबंध में चार विशेषण बताये। क्या बताए चार विशेषण? मेरे नाथ जो है समर्थ हैं, जो रक्षक हैं, जो हमारे अपने ही हैं उनकी कृपा में चार बातें बताई है। पहली बात बताई है- सुधामयी, अर्थात अमृत, जीवन देने वाले। दूसरी बात बताई है- सर्वसमर्थ, अर्थात् जिनके लिये कुछ भी असम्भव नहीं। तीसरा विशेषण है पतितपावन अर्थात् पवित्र करने वाले और चौथा विशेषण है अहेतुकी कृपा अर्थात् बिना हेतु के वे सब पर कृपा करने वाले हैं।

आप विचार करें कि हमारे जीवन की निर्बलताएं कितनी है? जीवन की मांग है, सामर्थ्य की मांग है और पवित्र होने की मांग है। जो हमारे अपने हैं उनकी कृपा की महिमा में चार विशेषताएं सुनी हमने। जीवन देने वाली, सामर्थ्य देने वाली, पवित्र करने वाली और बिना हेतु के कृपा करने वाली। इससे हम सब प्रार्थना के अधिकारी हो जाते हैं। इस प्रार्थना में यह नहीं बताया गया कि कृपा उन्हीं पर होगी जो उनको मानते हैं अथवा जो उन्हें जानते हैं। अभी तो यह बताया गया है कि कृपा जो है वो अहेतुकी है, अहेतुकी होने से हम सब उस कृपा के अधिकारी हो जाते हैं। चाहे माने या ना माने, चाहे जाने या ना जाने अहेतुकी कृपा सब पर होती है, किसी हेतु से नहीं होती है क्योंकि अहेतुकी है।

अब प्रश्न उठता है कि उनसे क्या मांगे और किसके लिए मांगे? यदि हम व्यक्तिगत अपने लिए मांगते हैं तो व्यक्तिगत का तो अस्तित्व ही नहीं है। अगर विचार करें तो व्यक्तिगत का तो कोई अस्तित्व ही नहीं है, क्योंकि शरीर हम है नहीं।.......लगातार

श्री कामधेनु कृपा प्रसाद

(परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज)

(1) गाय अमृत की नाभि है

यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत् स्थावरजंगमम्।
तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम्।।

जिसके द्वारा यह समस्त चराचर जगत (जड़ और चेतन) व्याप्त है और जो भूतकाल और भविष्यकाल की जननी हैं उस गोमाता को मैं सिर झुकाकर प्रणाम करता हूँ।

गावो विश्वस्य मातरः, गावो देवाः ससाक्षतः।
गावोऽमृतस्य नाभिः स्युः, गावो मे सन्तु संपदः।।

गाय विश्व की माता है। गाय साक्षात् देवस्वरूपा है। गाय अमृत का केंद्र (नाभि) है। गाय ही मेरी वास्तविक संपत्ति है।

अन्न, जल और हवा को अमृतमय बनाने का सामर्थ्य गोमाता में है और यही जीवन का आधार है– हवा, अन्न और जल। इसलिए कहा है गाय अमृत की नाभि है। ऐसा वेदों में जो कहा है वह इस आधार पर ही कहा है। गाय अमृत की नाभि है, यह सत्य जितना सतयुग में था उतना ही नहीं, उससे भी अधिक सत्य आज है। आज जब हवा, जल, अन्न सब दूषित हो गए हैं तो उन्हें शुद्ध करने का, उन्हें सात्विक करने का सामर्थ्य गोमाता में है।

गोमाता के वात्सल्य से प्राप्त पंचगव्यों से ही हम धरती से सात्विक अन्न की प्राप्ति कर सकते हैं, जल को पवित्र बना सकते हैं और हवा को शुद्ध कर सकते हैं। गोमय से धरती सात्विक उर्वराशक्ति से संपन्न होती है जिससे अन्न, फल, सब्जियाँ आदि अमृत स्वरूप हमें मिलते हैं। गोमूत्र से जल पवित्र होता है, जल के दोष, मल आदि सब गोमूत्र से समाप्त हो जाते हैं। तो गोमूत्र जल को पवित्र और रसयुक्त बनाता है और गोघृत से धूप, दीप, हवन, यज्ञ से वायु शुद्ध होती है और उसमें जीवनी शक्ति अमृतमयी शक्ति ऑक्सीजन भर जाती है। यहाँ जो अखंड ज्योति जी विराज रहे हैं जिनके आलोक में हम लोग सत्चर्चा कर रहे हैं यह अखंड ज्योति जी वैसे तो देवात्मा और महात्माओं का एक देदीप्यमान स्वरूप है, पर इनका जो प्राण है वह गोघृत है, गोघृत से ज्योति जल रही है। इसमें एक तोला (10 ग्राम) गो घृत जब जलता है तो उसके द्वारा 1000 किलो ऑक्सीजन की शुद्धि होती है।

इसी तरह से 24 घंटे में पानी व अन्य पेय पदार्थों के द्वारा जो हमारे पेट में कोई विकार, दोष गया है वो एक तोला गोमूत्र लेने से 24 घंटे में जल द्वारा गया हुआ विष समाप्त हो जाता है। गोमूत्र लेने से जल जन्य सभी विकार समाप्त हो जाते हैं। ऐसे ही गोकृषि अन्न गोमय से उत्पन्न हुआ, गोमय खाद से उत्पन्न हुआ विष रहित व केमिकल रहित अन्न शुद्ध और सात्विक होता है। तो गोमूत्र, गोमय और गोघृत व्यक्तिगत रूप से परिवार समाज और राष्ट्र के रूप में हम इन तीनों पदार्थों के माध्यम से अन्न को सात्विक बना सकते हैं, जल को पवित्र बना सकते हैं और वायु को शुद्ध कर सकते हैं।

हमारी रसोई में काम आने वाले अन्न, फल, सब्जियों का सात्विकीकरण जहाँ से ये उत्पन्न होती है उस धरती में गोमय देने से होता है। गोमय की खाद देकर उत्पन्न किया हुआ अन्न, फल, सब्जियाँ हमें शरीर से स्वस्थ बनाती है, दीर्घायु बनाती है, विवेकवान बनाती है, निर्मल मन वाला बनाती है। परमार्थ पथ में, आध्यात्मिक जगत में, सात्विक आहार का बड़ा भारी महत्व है। आहार शुद्ध होगा तो

अंत:करण शुद्ध होगा। आहार शुद्धि सत्व शुद्धि, सत्व शुद्धि ध्रुव स्मृति। आहार की शुद्धि से ही अंत:करण की शुद्धि होती है और अंत:करण की शुद्धि से हमारी भगवत सबंधी स्मृति दृढ़ होती है। इसलिए आहार शुद्ध प्राप्त हो ऐसा प्रयास हमें व्यक्तिगत रूप से सबको करना चाहिए। श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा शाखा एन.सी.आर. दिल्ली के जो गोभक्त हैं ये ऐसा चिन्तन कर रहे हैं कि इस चातुर्मास के पश्चात दिल्ली के गोभक्तों को शुद्ध सात्विक अन्न की प्राप्ति हो, उनकी रसोई में विषमुक्त और हिंसा रहित अन्न, फल, सब्जियाँ, मसाले डाले जाएं जिससे लौकिक और पारलौकिक जीवन की आधार भूमि बने। लौकिक जगत में भी स्वस्थ शरीर की आवश्यकता है और परमार्थ में भी स्वस्थ शरीर की आवश्यकता है। यह तभी संभव है जब आहार शुद्ध हो। आहार शुद्धि से सत्व शुद्धि तो होती है, पर संपूर्ण रूप से आरोग्य की प्राप्ति भी होती। ऐसे ही सभी को घर में वेदलक्षणा गोमाता के वात्सल्य से प्राप्त गो गंगाजल जिसे हम गोमूत्र कहते हैं वो प्राप्त होवे और सभी लोग अपने पीने वाले जल में मिला दे सामूहिक रूप से अथवा 24 घण्टे में एक बार व्यक्तिगत रूप से एक तौला के बराबर गोमूत्र जल में मिलाकर पी लें। चाहे सामूहिक रूप से अथवा व्यक्तिगत रूप से 24 घंटे में कम से कम एक बार एक तौले जितने गोमूत्र को जल के साथ ग्रहण कर लें, आपको बहुत लाभ होगा। बोलिये मोर मुकुट बंशी वाले की जय। गोमाता की जय।

(2) गाय है तो हम हैं

गा वै पश्याम्यहं नित्यं गावः पश्यन्तु मां सदा।
गावोऽस्माकं वयं तासां यतो गावस्ततो वयम्।।

मैं प्रतिदिन गौओं का दर्शन करूँ। गौएं मुझ पर हमेशा अपनी कृपा दृष्टि रखें। गौएं हमारी हैं और हम उनके हैं।जहाँ गौएं रहेंगी, वहीं हम रहेंगे।

हिंदुओं का, हमारे पूर्वजों का यह उद्घोष रहा है कि जहाँ गाएं हैं वहीं हम हैं अथवा गाएं हैं तो ही हम हैं। गाय के बिना हम नहीं है। गाय के बिना हमारा अस्तित्व नहीं है। हम माने हिंदू सनातनी, हम माने मानव, हम माने प्राकृतिक विधान, हम माने सनातन धर्म, हम माने मानवता। गोमाता है तो ही सनातन धर्म है, गोमाता है तो ही मानवता है, गोमाता है तो ही प्राकृतिक विधान है। प्रकृति का जो स्वरूप है सुचारू रूप से चलने का उसमें गोमाता उनको संतुलित करने वाली शक्ति है, धुरी है।

जिस तरह से देहधारी प्राणी विभिन्न प्रकार की प्रवृत्ति करने से कमजोर होते हैं, उनकी शक्ति क्षय होती है ऐसे ही सृष्टि के भी निरंतर चलने से उसकी शक्ति क्षय होती है। जिस तरह प्राणियों को शरीर को जीवित रखने और सक्रियता बनाने के लिए आहार की आवश्यकता होती है ऐसे ही यह पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश आदि पंच महाभूतों समष्टि प्रकृति को सृष्टि को सक्रिय रहने के लिए गतिशील रहने के लिए प्राण ऊर्जा की आवश्यकता होती है, भोजन की आवश्यकता होती है। जैसे सभी प्राणियों को पृथ्वी माता भोजन देती है, ऐसे ही भगवती आदि शक्ति गोमाता पृथ्वी सहित समष्टि पांच महाभूतों को भोजन देती है, अष्टधाप्रकृति को पुष्ट करती है। इसलिए यह हम हिंदुओं का ही नहीं हमारे अपौरुषेय वेदों का उद्घोष है- **गावोऽमृतस्य नाभिः** गाय अमृत की नाभि है। वह जीवन दात्री है। त्रिलोकी में जितने अमृत है उनको पुष्ट करने वाली उनका पोषण करने वाली पूज्या वेदलक्षणा गोमाता है।

गोमाता ने ही हमें वह दर्शन प्रदान किया है जिसके माध्यम से हम नित्य, अविनाशी, प्रकाशमय, रसमय जीवन की प्राप्ति कर सकते हैं अथवा यूं कहें गोमाता ने ही हमें सच्चिदानंद प्रभु की प्राप्ति कराई है। अंदर और बाहर, अभी और अतीत में अथवा भविष्य में जब किसी को व्यष्टि या समष्टि में

सच्चिदानंद रूप में प्रभु की प्राप्ति हुई है तो उसका आधार गोमाता ही रही है। हम सनातन हिंदुओं के अवतारों का कारण और अवतारों का आह्वान करने वाली भगवती गोमाता ही है। प्रत्येक कल्प में भगवान का अवतार गोमाता के आह्वान पर, प्रार्थना पर होता है और अंदर अंत:करण में, हृदय में विराजमान प्रभु का दर्शन भी गोमाता के वात्सल्य से प्राप्त सतोगुण की वृद्धि से ही होता है।

गोमाता की कृपा से जब सत्वगुण बढ़ता है अंत:करण शुद्ध होकर सत्व में विस्तार होता है तो उसे अचल शांति, स्थिरता आदि की प्राप्ति होती है। मन के निश्चल होने से, मन के शांत होने से, बुद्धि के स्थिर होने से हृदय में विराजमान प्रभु के दर्शन होते हैं। जिस तरह हिलने वाले जल में भगवान सूर्य का प्रतिबिंब साफ नहीं दिखता है, उसी तरह मन इंद्रियों और बुद्धि की चंचलता से अस्थिरता से और अनिश्चिता से अंत:करण की हलचल से हृदय में विराजमान प्रभु के दर्शन नहीं होते। यह हलचल ही रजोगुण है और इस हलचल में जो जड़ता है, जो आवरण है वह तमोगुण है। तमो का अन्त और रजो का शमन करने से सतोगुण बढ़ता है।

पूज्या गोमाता अपने वात्सल्यमय गव्यों से और अपनी अनुकंपा से तमो तथा रजो को शांत कर देती हैं और सतो को बढ़ाती है। इसलिए वेदवाणी, गुरुवाणी और संतवाणी की अभिव्यक्ति में गोमाता मुख्य आधार है। गोमाता की कृपा से गोमाता की उपासना से ही ऋषियों को ऋतंभरा प्रज्ञा की प्राप्ति हुई। ऋतंभरा प्रज्ञा प्राप्त ऋषियों ने ही वेदों के मंत्रों का साक्षात्कार किया। इतना ही नहीं गो की अनुकंपा से ही गुरु में गुरुत्व और संत में संतत्व की अभिव्यक्ति हुई। इस अभिव्यक्ति के परिणामस्वरूप ही गुरुवाणी और संतवाणी का प्राकट्य हुआ। हम जिस संतवाणी का श्रवण, जिस संतवाणी के प्रकाश में अपने इष्ट का अनुसंधान कर रहे हैं उस संतवाणी के मूल में भी पूज्या गोमाता ही है।मोर मुकुट बंशीवाले की जय!

(3) सप्त लोकों में गोमाता

भगवती गोमाता पवित्र है और सब मंगलों की खान है। सभी लोक गोमाता में ही प्रतिष्ठित है। ऐसी महिमा शास्त्रों में कही गई है कि गाय के बिना एक भी लोक स्थित नहीं रह सकता। केवल मृत्युलोक ही नहीं समस्त 14 लोक माने जाते हैं, सात लोक पृथ्वी से नीचे हैं और साथ ही ऊपर वाले लोक ये सभी गोमाता में प्रतिष्ठित है। गोमाता के हटते ही, गोमाता के बिना एक भी लोक का अस्तित्व नहीं रह सकता। उन पर सातों लोक टिके हुए हैं। सातों लोकों में, वहाँ के ऊपर के लोकों में अलग-अलग तरह की गोमाताएं और उनके कुल की पूजा होती है। सबसे ऊपर वाले लोक में बहुला नाम की गोमाता की पूजा स्वयं भगवान ब्रह्माजी करते हैं। इस तरह से बहुला समंगा, अकुतोभया, सख्या, क्षेमा, भूयसी और सर्वसहा। धरती की गोमाता का नाम सर्वसहा और देवताओं की गोमाता का नाम सख्या है।

सज्जनों! धरती की गोमाता का जैसा नाम है यथा नाम तथा गुण है, उन्हें सर्वसहा कहा है। वह सब प्रकार के कष्ट सहन करती है। सबको जीवन देने वाली गोमाता का जीवन आज संकट में है। उनके ऊपर आज बहुत भारी संकट आया है। भगवान से प्रार्थना करते हैं कि जो सबको जीवन देने वाली है उनको संकट से उबारे। उनका जीवन बचेगा तो ही सबका जीवन बचेगा। केवल लौकिक जीवन ही नहीं, आध्यात्मिक जीवन भी गोमाता से मिला है।

हम जो श्रीमद् भागवत गीता का स्वाध्याय कर रहे हैं और उससे जो आत्मबल पा रहे हैं वह आत्मबल भी गोमाता की ही देन है। भगवान के सभी अवतारों के मूल में गोमाता का आर्तनाद ही है। गो के आह्वान से या यूं कहें कि प्राणी जगत पर भारी संकट आने पर ऋषि, देवता सब धरती को गोमाता के रूप में आगे करके भगवान को बुलाते हैं। हम सब भगवान से प्रार्थना करते हैं कि धरती पर सर्वसहा गोमाता के दु:ख दूर हों और इसका वंश सुखी हों।

ठाकुरजी कब आओगे

(भगवत प्रेरणा से)

पिछले अंक से आगे.........

कुछ देर पर्यन्त वनराज सिंह बैठा-बैठा अपलक दृष्टि से देखता रहा और फिर अचानक खड़ा होकर साधनासन को दाएं रखकर चार-पाँच मीटर दूर-दूर घूमते हुए महाराज जी के सामने आ गया तब महाराजश्री ने दृष्टि ऊँची करके देखा तभी सिंह ने भी देखा, दोनों दृष्टियो मिल गई और तत्काल वनराज ने तीन बार मस्तक झुकाकर प्रणाम किया और मुड़कर प्रस्थान कर लिया। इस संपूर्ण घटना को ठाकुर हनुमान सिंह तथा उनके साथियों ने वृक्षावली की ओट में खड़े रहकर देखा। वनराज के घने जगंल में प्रवेश होने के 15-20 मिनट उपरांत उपरोक्त सभी महानुभाव साधनासन के निकट आए महाराज जी को प्रणाम करके चुपचाप बैठ गए। एक घंटा से अधिक समय होने के बाद गायों वाले सरपंच व उनके साथी प्रणाम करके प्रसाद लेकर वहाँ से रवाना हुए।

उनके जाने के कुछ देर बाद ठाकुर हनुमान सिंह जी हाथ जोड़कर बोले कि महाराज जी यह सब क्या हो रहा है? यह वनराज सिंह अत्यंत हिंसक होते हुए भी आप परद हमला नहीं किया और एक सुरक्षा कर्मी की तरह यहाँ बैठा रहा, आपके आगमन के पश्चात साधनासन और धुणा की परिक्रमा करके घने वन में प्रवेश कर गया। यह दृश्य हम लोगों की आखों के सामने हुआ है। हम नेत्रों पर विश्वास नहीं कर पा रहे हैं। आप हमारा समाधान कीजिए। महाराज जी ने कहा- मुझे भी आशचर्य के साथ हृदय में गहरा विश्वास हो रहा है, यह सर्वसमर्थ प्रभु की लीला का भाग है। जो मानव अंहिसा का वृत धारण कर लेता है उसके पास हिंसक प्राणी भी अपने स्वभाव को त्याग देते हैं, ऐसा धर्म शास्त्रों से सुना है। इससे अधिक इस विषय में हमको कुछ भी ज्ञात नहीं है। आप सभी भगवान की कृपा का स्मरण करते हुए अपने गाँव पधारें ओर ध्यान रखिए यह घटना आसपास के गाँवों में प्रचारित नहीं होनी चाहिए, नहीं तो लोग कोई चमत्कार कहकर अनावश्यक यहाँ भीड़ लगाकर साधना में विघ्न करेंगे। हम एकान्त चाहते हैं। एक सप्ताह पश्चात पुनः रविवार को यहाँ पर पधारिए, उसके बाद आगे भगवान विश्वनाथ जी की जैसी प्रेरणा होगी वह आपको अवगत करा देंगे।

महाशिवरात्रि की दूसरी रात्रि को ब्रह्म मुहूर्त में महाराजश्री को आदि गुरु भगवान विश्वनाथ का स्वप्न निर्देश हुआ कि इस भूमि पर अवशेष भजन साधन संपन्न हो गया है, अब यथाशीघ्र आगे की अवशेष यात्राएं प्रारंभ कीजिए। भगवान विश्वनाथ जी के निर्देश को शिरोधार्य करके अमरकंटक से प्रस्थान की मानसिक तैयारियों हो गई। रविवार को ठाकुर हनुमान सिंह जी तथा अन्य कैवची ग्रामवासी तपोस्थल पहुँच गए। आपश्री ने चित्रकूट, अवधपुरी आदि के प्रवास का भाव प्रकट किया।

सायंकाल गोधूलि मुहूर्त में उपरोक्त श्रद्धालुओ के संग माँ नर्मदा की उद्‌गम स्थली 'माई की बगिया' गए। विधिवत पूजन-अर्चन किया। पवित्र तीर्थ जल लेकर रात को सभी लोग कैवची ग्राम आ गए। यहाँ एक बड़े समारोह की तैयारियों चल रही थी। पूछने पर ज्ञात हुआ कि कल यहाँ बालयोगी महाराज (महाराजश्री) के प्रस्थान से पूर्व आसपास के गाँवों के धर्मप्रेमी दर्शन करने आयेंगे। वास्तव में उस समय अमरकंटक क्षेत्र वासियों को पचरी पानी के घटनाक्रम की जानकारी मिल चुकी थी। यह सब देखकर महाराजश्री ने ठाकुर साहब के सामने असंतोष प्रकट किया कि पूर्व में मनाई करने पर भी साधना स्थली के घटनाक्रम की सूचनाएं प्रचारित क्यों हुई। ठाकुर

हनुमान सिंह जी तथा अन्य श्रद्धालुओं ने भूल स्वीकार की और भविष्य में उपरोक्त प्रसंग का प्रचार-प्रसार नहीं करने का वचन दिया। उसके बाद श्री महाराज जी कार्यक्रम स्थल पर आए और उपस्थित श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा कि हमारी अयोग्यता होते हुए भी शरणागत को प्रभू किस तरह अभयदान एवं सुयश प्रदान करते हैं। अमरकंटक साधना स्थली पर आदि गुरु भगवान शिवजी की अहेतुकी कृपा का अनुभव उपस्थित श्रद्धालुओं को श्रवण कराया तथा भगवान शिव की आज्ञानुसार अन्यत्र प्रस्थान करने हेतु आभार सहित अनुमति मांगी गई। दर्शनार्थ आए श्रद्धालुगण यह सुनकर भाव विभोर हो गए। सभी के आग्रह पर कुछ फलाहार ग्रहण किया और सायंकाल गोधूलि वेला में कैवची गाँव से विजय करके अवधधाम के लिये प्रस्थान किया।

कुछ दिनों की यात्रा करके महाराजश्री सतना, चित्रकूट होते हुए अवधधाम पहुँचे। सरयू में स्नान उपरांत छोटी छावनी में महंत श्री नृत्यगोपालदासजी महाराज जी से भेंट की। पूज्य महंतजी को साष्टांग प्रणाम करके कुछ समय के लिये अवधवास का निवेदन किया। पूज्य महंत जी ने वात्सल्य पूर्वक स्वीकृति प्रदान कर दी। छोटी छावनी के महंत जी ने महाराजश्री को बहुत ही प्रेम से रखा और अपने साथ फलाहार कराते थे। अवधधाम वास में प्रतिदिन सरयू स्नान, श्री हनुमान गढी, कनकभवन दर्शन तथा रामचरितमानसपाठ का श्रवण यह नियम बन गया।

श्री अवधपुरी में निवास करते हुए महाराज श्री को अनेक प्रकार की दिव्य अनुभूतियाँ हुई। रामलला सरकार की सरयू पार गोप घर बाल लीलाओं में सम्मिलित होने तथा वन गमन में साथ चलने का विशिष्ठ अनुभव हुआ। महाराज जी को बड़े भ्राता स्वरूप श्रीरामजी का स्नेह मिला। दो माह पश्चात सरयू पार मनोरमा नदी के तट पर निवास करने वाले नागा बाबा जी अवध पधारे। उनके मुख से मनोरमा नदी की महिमा श्रवण कर महाराज जी का भाव वहाँ जाकर निवास करने का हुआ।

छोटी छावनी वाले महंतजी की आज्ञा लेकर महाराज जी ने नागा बाबा के साथ प्रस्थान किया। सायंकाल वसती जिले के नगरबाजार पोखरा गांव की सीमा में मनोरमा नदी के तट पर नागा बाबाजी का स्थान था वहाँ पहुँच गए। यहाँ निवास काल में महाराजश्री नागाजी द्वारा रामचरित मानस का पाठ श्रवण करते और नित्य नियम पूर्वक मनोरमा में स्नान करते थे। शारदीय नवरात्र अनुष्ठान संपन्न होने तक आपश्री उसी जगह ठहरे।

बाद में नागा बाबा की अनुमति लेकर मनोरमा तट पर विचरण करने लगे यहीं पर संभ्रात परिवार में जन्मे एक युवा साधु दिव्यानंदजी का मिलना हुआ जो उच्च शिक्षण संपन्न थे। कुछ समय साथ रहने से मैत्री बढ़ गई। सर्दी में ठण्ड से बचाव हेतु धूंणा स्थापित होता था। देर रात तक दोनों बैठकर ध्यान योग साधना और हिमालय वासी योगियों की चर्चा करते। दिव्यानंद जी अनेक योगियों के चरित्र सुनाते।

इस बीच माघ कल्पवास का समय आ गया दिव्यानंदजी के आग्रह पर उनके साथ आपश्री कल्पवास करने प्रयागराज आए। इधर त्रिवेणी मैदान में जूसीगांव के निकट लोक प्रसिद्ध योगी देवराह बाबाजी का केम्प लगा था जहाँ पर पूज्य बाबाजी मचान उपर विराजमान रहते। दिव्यानंदजी महाराजश्री को वहीं ले गए। जैसे ही देवराह बाबाजी को दण्डवत किया तो बाबाजी बोले- बच्चा तुम यहीं रहो, कल्पवास करो फल-फ्रूट बहुत मिलेगा। बाबाजी की आज्ञानुसार केम्प के पण्डाल में पुआल पर टाट व कंबल के आसन लग गए। पूज्य देवराह बाबा प्रतिदिन आपश्री को फल प्रसाद अपने करकमलों से देते और गंगा स्नान करने जाते तब साथ लेकर जाते........लगातार

माँ

(परम् श्रद्धेय स्वामी श्री रामसुखदासजी महाराज)

पिछले अंक से आगे...... क्या बच्चा माँ को जानता है कि माँ कहाँ पैदा हुई है, किसकी बेटी है, किसकी बहन है, किसकी स्त्री है, किसकी देवरानी है, किसकी जेठानी है, किसकी ननद है, किसकी बुआ है, माँ कहाँ रहती है, किससे इसका पालन होता है? माँ क्या करती है, किस समय किस धंधे में लगी रहती है आदि बातों को बालक जानता ही नहीं और उसको जानने की जरूरत भी नहीं है।

ऐसे ही हमारी मां अर्थात भगवान कैसी है कौन है, वह सुंदर है कि कुरूप है, वह क्रूर है कि दयालु है, वह ठीक है कि बैठीक है, वह हमारे अनुकूल है कि प्रतिकूल है आदि आदि बातों से हमें क्या मतलब? बस वह हमारे माँ है, वह हमारे लिए जो ठीक होगा वह आप ही करेगी। हम क्या समझे कि यह ठीक है या बैठीक। अपना ठीक-बैठीक समझना भी क्या हमें आता है? हमें यह ज्ञान है क्या? हमें यह दिखता है क्या? अरे सूरदास को क्या दिखे? हम क्या समझें कि यह ठीक है कि बैठीक, अच्छा है कि मंदा है, इन बातों को हम क्या समझे और क्यों समझे। हमें इन बातों के समझने की कुछ भी जरूरत नहीं है। बस हम उनके हैं और वे हमारे हैं। वे ही हमारे माता-पिता, भाई बंधु, कुटुंबी आदि सब कुछ हैं और वे ही हमारे धन संपत्ति वैभव जमीन जायदाद आदि सब कुछ हैं।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव।
त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या च द्रविणं त्वमेव।
त्वमेव सर्व मम देव देवः।

कोई आपसे पूछे कि तुम्हारी माँ कौन है कि ईश्वर, तुम्हारा बाप कौन है कि ईश्वर, तुम्हारा भाई कौन है कि ईश्वर, तुम्हारा साथी कौन है कि ईश्वर, तुम्हारा काम करने वाला कौन है कि ईश्वर। हमारे तो सब कुछ वे ही हैं। सब कुछ माँ ही है। जैसे बच्चे के लिए धोबी भी माँ है, नाई भी माँ है, दाई भी माँ है, भाई भी माँ है, ईश्वर भी माँ है, गुरु भी माँ है, नौकर भी माँ है, सफाई कर्मी भी माँ है आदि आदि। छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा सब काम करने वाली माँ है।

ऐसे ही हमारे सब कुछ भगवान ही हैं तो हमें किस बात की चिंता। **चिंता दीनदयाल को मो मनं सदा आनंद**। हमारे मन में तो सदा आनंद ही आनंद है, मौज ही मौज है। हमारी चिंता वे करें ना करें, हमें इस बात की क्या परवाह है। जैसे माँ बालक की चिंता करें ना करें इससे बालक को क्या मतलब। वह आप ही चिंता करती है बालक की क्योंकि बालक उसका अपना है, यह उस पर कोई एहसान है क्या कि वह बालक का पालन करें? अरे यह तो उसका काम है। वह करें ना करें इससे बालक को क्या मतलब? बालक को तो इन बातों से कुछ मतलब नहीं।

ऐसे ही भगवान हमारी माँ है, बस वह हमारे माँ है और हमें ना कुछ करना है, ना जानना है, ना पढ़ना है किंतु हरदम मस्त रहना है, मस्ती से खेलते रहना है माँ की गोदी में। खेलते रहे हंसता रहे खुश होता रहें। क्यों खुश होते रहें? क्योंकि इसमें माँ खुश होती है, राजी होती है अर्थात हम प्रसन्न रहें तो इसमें माँ राजी होती है। माँ की राजी के लिए हम प्रसन्न रहते हैं, खेलते हैं, कूदते हैं और काम धंधा भी हम माँ की राजी के लिए ही करते हैं और बातों से हमें कोई मतलब ही नहीं है, हमें तो एक माँ से मतलब है। जैसे माँ के पास सब कुछ है वह सब बालक के पालन के लिए ही होता है। माँ का बल है, बुद्धि है, योग्यता है, विद्या है, शरीर है, कपड़े हैं, घर आदि सब कुछ बच्चों के लिए ही होता है। ऐसे ही भगवान के पास जो कुछ ...शेष अगले अंक में

श्रीमद् भागवत कथा

(पू. मलूकपीठाधीश्वर महंत श्री राजेन्द्रदासजी महाराज)

पिछले अंक से आगे.....

शरणानंद जी के जैसे तो शरणानंद जी के विचार है। शरणानंद जी का एक वाक्य है, वे कहते हैं-**बटोरना विषाद है, बांटना प्रसाद है।** क्या कहते हैं कि बटोरना विषाद है और बांटना प्रसाद है। आप जितना बटोरते चले जाओगे, उतना दु:ख, कष्ट, विषाद बटोरते जाओगे और जितना बांटते जाओगे उतने खुश होते चले जाओगे। आपको विश्वास न हो तो सामने सफेद कपड़ा पहने झोली रखे एक बाबा जी बैठे हैं उनकी तरफ देख लो। अहर्निश लुटाते रहते हैं, इसलिये हंसते रहते हैं। ये भी अगर कहीं खाता खुलाकर जमा करना शुरू कर दें तो यह हंसना सब भूल जायेंगे, फिर कहेंगे अब तो बहुत कमी है, बहुत कमी है, फिर कमी आनी शुरू हो जाएगी। अभी कोई कमी नहीं रहेगी। जब तक उड़ाते रहोगे तब तक कमी नहीं, जब तक बांटते रहोगे तब तक कोई कमी नहीं, बांटना बंद कर दोगे तो रोना पड़ेगा।

कितनी बढ़िया बात है- बांटना प्रसाद है और प्रसाद का अर्थ क्या है? ''**प्रसादस्तु प्रसन्नता**'' बांटना प्रसाद है और बटोरना विषाद है। जितना बटोरते चले जाओगे उतना विषाद बढ़ेगा। संग्रह निषिद्ध नहीं है, बहुत ध्यान से सुनें इस बात को, संग्रह निषिद्ध नहीं है। हम ऐसा उदहारण देंगे कि आप उसको काट नहीं सकते। ग्रीष्मकाल में भगवान सूर्य यदि जल का संग्रह न करें तो संसार की क्या हालत होगी, बोलो। एक साल बिना पानी बरसे गुजर जाए तो क्या हालत होती है? हा-हाकार मच जाता है। तब लोग चिल्ला-चिल्ला कर कहते हैं कि जल ही जीवन है, तब समझ में आता जल ही जीवन है। इस समय संवत 2081 चल रहा है, संवत 1956 का काल आपने सुना होगा। बड़े बूढ़ों के मुंह से सुना होगा। पहले गीत गाती थी माताएं। ब्रज में भी गीत गाती थी। दिनेश जी, मारवाड़ में और ब्रज में ऐसे गीत गाए जाते थे। ''छप्पनिया सौत मत आना मेरे मारवाड़ में'' छपना अकाल तुम लौटकर फिर कभी मारवाड़ में मत आना। मारवाड़ खाली हो गया था, इतना भीषण अकाल पड़ा उस वर्ष राजस्थान में। 56 में कितने साल पुरानी बात है, यही 125 वर्ष हुए हैं। 1956 की बात है जल नहीं बरसने के कारण कितना बड़ा संकट आया प्रजा पर।

आप सोचो भगवान सूर्य यदि जल का संग्रह न करें तो क्या वह वर्षा काल में प्रजा को सुखी कर सकते हैं? अब यह बात अलग है कि राजा कथंचित भ्रष्ट हो जाए, मंत्री भ्रष्ट हो जाए और प्रजा की गाढ़ी कमाई का वह दुरुपयोग करें, यह तो उनकी जिम्मेदारी है लेकिन एक सामान्य बात है कि राजा यदि प्रजा से कर ना ले, टैक्स ना ले तो जो बड़ी-बड़ी योजनाएं राजा बनाते हैं, सेना के द्वारा राष्ट्र की, देश की सुरक्षा होती है, रक्षा में, चिकित्सा में कृषि में, कोई देवीय आपदा में जो प्रजा की सेवा वह करते हैं अथवा विकास के कार्य करते हैं यदि वह संग्रह टैक्स का न करें तो क्या राजा विकास का कार्य कर सकता है? नहीं कर सकता।

हमारा यह विषय तो नहीं है लेकिन हमसे यदि कोई पूछे तो व्यक्तिगत हमारी यह राय है कि सर्वोच्च न्यायालय के द्वारा एक इस प्रकार का जनहित में स्वयं संज्ञान लेकर के इस प्रकार का कोई कठोर निर्देश देना चाहिए जिससे यह जो फ्री की रेवड़ियां लोग बांट रहे हैं और देश के साथ विश्वासघात कर रहे हैं ऐसे लोगों के जो काले कारनामे है वह बंद होने चाहिए कि फ्री खोरी का काम अच्छा नहीं है। कोई भी राजनेता फ्री बांटने की बात कहता है तो क्या अपने घर से देता है या अपनी जेब से देता है? किसी के अन्य के धन को दे रहा है वह क्या अधिकार

है उसको? फिर विकास का कार्य कैसे होगा? तो इस पर संज्ञान लेकर के सुप्रीम कोर्ट को इस प्रकार का फैसला करना चाहिए कि राजनीतिक पार्टियों के एक नियमावली हो। वह यह बात पहले प्रमाणिक कर सकें कि हम किस प्रकार से विकास के कार्य करते हुए भी अपनी इस बात को पूरा करवा नहीं कर सकते वह साबित नहीं कर सकते इसलिए राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए राजा का कर लेना अच्छा है और प्रजा का कर चोरी ना करते हुए कर देना अच्छा है। टैक्स देना चाहिए, चोरी नहीं करनी चाहिए यह उत्तम पक्ष है। इसलिए संग्रह का निषेध नहीं है। इसी को श्री आनंददास जी महाराज, इसी को गोस्वामी जी ने कहा 'संग्रह त्याग न बिनु पहचाने' सच्चा त्याग वही है जो समझ और बोध (ज्ञान) से पैदा हो, न कि देखा-देखी या मजबूरी में किया जाए।

समझ यही है कि राजा को प्रजा की भलाई के लिये संग्रह करना और फिर उसको प्रजा की भलाई के लिये व्यय करना चाहिये और सन्यासी को संसार से मोह का त्याग करने के लिये संग्रह का त्याग करना चाहिये। यदि त्याग के लिए संग्रह है तो वह संग्रह भी संग्रह ना होकर त्याग ही है। संग्रह के लिए संग्रह है तब वह बटोरना विषाद है पर यदि त्याग के लिए संग्रह है तो संग्रह नहीं है।

हम पुनः स्मरण करा रहे हैं- यह जो अक्षय गोसेवा की योजना है इसकी सबसे पहले किसने सलाह दी थी? श्री राधाबल्लभ जालान जी ने सबसे पहले। सबसे पहले इस योजना को सामने रखने वाले री राधावल्लभ जी थे, हमसे कोई भूल हुई हो तो बता दें, गोपाल जी उसके साक्षी है और केवल उन्होंने बोला ही नहीं था, स्वयं देकर उन्होंने शुरू किया। मेरे ऊपर दबाव डाला, बोले महाराज जी अभी तो आप लोगों की समझ में नहीं आ रहा है पर आगे आपकी समझ में आएगा। तो समझ में आ गया। क्या समझ में आया? यदि वह अक्षय राशि उन्होंने कुछ जमा नहीं की होती तो क्या गोसेवा के लिए बैंक से कर्ज लेना पड़ता? क्या बैंक हमें कर्ज देता? अक्षय कोष की निश्चित राशि यदि ना होती तो बैंक से कर्ज नहीं मिलता। अक्षय राशि का तो नियम है, उसको तो आप इधर-उधर कर नहीं सकते हैं तो उस एफडी के ऊपर गोसेवा के लिये कर्ज मिल गया। हम कहते यदि वह भी ना होता तब क्या होता? व्यवस्था तो कहीं ना कहीं से जुटती पर गाय कष्ट पाती। तो इस प्रकार त्याग(सेवा)के लिये संग्रह करना संग्रह नहीं है।

दूसरी बात और हम निवेदन कर दें। कुंभ महापर्व हमारी सनातन संस्कृति का महापर्व है इसमें कोई संदेह नहीं। पूरे देश से वहाँ साधु संत पहुँचते हैं और एक साथ पूरे देश के संतों के वहाँ दर्शन हो जाते हैं। लेकिन तड़क-भड़क, चटक-मटक इस समय युग के प्रभाव से कुंभ में आ गई है। आपको सुनकर आश्चर्य होगा कि 12-12, 13-13 करोड़ के पंडाल इस बार बने हैं। ठेकेदार को 12-12 करोड़ में लोगों ने ठेके दिए पंडाल बनाने के, शिविर लगाने के। छोटे लोग नहीं बड़े लोगों की बात है। कई बार कुछ मन के प्रतिकूल बातें सामने आ ही जाती है तो मन में कई बार होता है कि अरे क्या हो गया कई कुंभ देख लिये, हाथ जोड़ो नमस्कार करो, पर जब एक लघु भारत नहीं लघु विश्व का वहाँ दर्शन करते है और लोग कितनी आस्था श्रद्धा लेकर कुंभ में पहुंचते हैं, कितना कष्ट सहकर कई-कई किलोमीटर बड़े-बड़े संपन्न परिवार के लोग पैदल चलते हैं संतों के दर्शन करने के लिये, वहाँ धूल में मिट्टी में बैठते हैं गीले में भी बैठ जाते हैं और कोई एक फूल किसी संत की माला से गिर जाता है उसको भी कितनी श्रद्धा से सर से लगते हैं, उस श्रद्धा का, भारतीय श्रद्धा का जब दर्शन करते हैं, ऐसी भारतीय आस्था का दर्शन करते हैं तो मैं सच्ची बात कहूं हृदय रोने लग जाता है। हमको लगता है हम साधु नहीं सच्चे साधु ये हैं जिनमें ऐसी श्रद्धा संत वेश के प्रति है?.......लगातार

गो-सावित्री स्त्रोतम्

महाभारत से संकलित

महाभारत में पितामह भीष्म और धर्मराज युधिष्ठर के बीच गोमाता की महिमा पर संवाद हुआ वह गो सावित्री स्तोत्रम् है। यह "गोसावित्रीस्तोत्रम्" अत्यंत पुण्यदायक और वैदिक-तत्वों से परिपूर्ण स्तोत्र है। यह गोमाता को सावित्री (वेदमाता) के समान घोषित करता है और गोमाता के अंगों में समस्त देवताओं, वेदों और शक्तियों की स्थिति बताता है। गोमाता में संपूर्ण वेद, देवता, ऋषि, और शक्तियाँ निवास करती हैं। गोमाता की सेवा, प्रदक्षिणा, या स्तुति सब कुछ समस्त तीर्थ, यज्ञ और दान के समान फल देने वाला है। जो प्रतिदिन श्रद्धा से गोसावित्रीस्तोत्रम् का पाठ करता है, वह पापों से मुक्त होकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों पुरुषार्थो को प्राप्त करता है।

नारायणं नमस्कृत्य देवीं त्रिभुवनेश्वरीम् ।
गोसावित्रीं प्रवक्ष्यामि व्यासेनोक्तं सनातनीम्।।

नारायण और त्रिभुवनेश्वरी देवी को नमस्कार करके, अब मैं उस सनातनी गोसावित्री (गोमाता) का वर्णन करता हूँ, जिसका उपदेश स्वयं व्यास मुनि ने किया था।

यस्य श्रवणमात्रेण सर्वपापैः प्रमुच्यते ।
गवां निःश्वसितं वेदाः सषडङ्गपदक्रमाः।।

इस स्तोत्र को केवल सुनने मात्र से ही मनुष्य सभी पापों से मुक्त हो जाता है। गोमाता के श्वासों से ही वेद- उनके छह अंगों सहित प्रकट हुए हैं।

शिक्षा व्याकरणं छन्दो निरुक्तं ज्योतिषं तथा।
एतासामग्रशृङ्गेषु इन्द्रविष्णू स्वयंस्थितौ।।

शिक्षा, व्याकरण, छन्द, निरुक्त और ज्योतिष- ये वेद के अंग हैं। इन सबका निवास गोमाता के अग्र शृंगों (सींगों) में है, जहाँ स्वयं इन्द्र और विष्णु स्थित हैं।

शिरो ब्रह्मा गुरुः स्कन्धे ललाटे वृषभध्वजः।
कर्णयोरश्विनौ देवौ चक्षुषोः शशिभास्करौ।।

गोमाता के सिर में ब्रह्मा जी, कंधों में गुरु (बृहस्पति), ललाट पर वृषभध्वज (शिव), कानों में अश्विनीकुमार और नेत्रों में चन्द्र और सूर्य देव निवास करते हैं।

दंष्ट्रेषु मरुतो देवा जिह्वायां च सरस्वती ।
कण्ठे च वरुणो देवो हृदये हव्यवाहनः।।

गो के दाँतों में मरुद्गण देवता हैं, जिह्वा पर सरस्वती, गले में वरुण देव और हृदय में हव्यवाहन (अग्निदेव) निवास करते हैं।

उदरे पृथिवी देवी सशैलवनकानना ।
ककुदि द्यौः सनक्षत्रा पृष्ठे वैवस्वतो यमः।।

गो के उदर (पेट) में पर्वत, वन और नदियों सहित पृथ्वी देवी विराजती हैं। पीठ पर नक्षत्रों सहित आकाश और कूबड़ में सूर्यपुत्र यमराज स्थित हैं।

ऊर्वोस्तु वसवो देवा वायुर्जङ्गे समाश्रितः ।
आदित्यस्त्वाश्रितो वाले साध्याः सर्वाङ्गसन्धिषु।।

गो के जंघाओं में वसुदेवता, चरणों में वायु, पूँछ में आदित्य देव और अंग-संधियों में साध्यगण देवता स्थित हैं।

अपाने सर्वतीर्थानि गोमूत्रे जाह्नवी स्वयम् ।
धृतिः पुष्टिर्महालक्ष्मीर्गोमये संस्थिताः सदा।।

गो के अपान (गुद) भाग में सभी तीर्थ हैं, उसके मूत्र में स्वयं गंगा (जाह्नवी) विराजती हैं। धृति, पुष्टि और महालक्ष्मी ये सभी सदा गोमय (गो के गोबर) में निवास करती हैं।

नासिकायां च श्रीदेवी ज्येष्ठा वसति भामिनी।
चत्वारः सागराः पूर्णा गवां ह्येव पयोधरे।।

गोमाता की नासिका में श्रीदेवी (लक्ष्मी) और ज्येष्ठा देवी वास करती हैं। उनके स्तनों में चारों सागर निवास करते हैं।

खुरमध्येषु गन्धर्वाः खुराग्रे पन्नगाः श्रिताः ।
खुराणां पश्चिमे भागे ह्यप्सराणां गणाः स्मृताः।।

गो के खुरों के मध्य गंधर्व, अग्रभाग में नाग और खुरों के पीछे के भाग में अप्सराओं के समूह रहते हैं।

श्रोणीतस्तेषु पितरो रोमलाङ्गूलमाश्रिताः।
ऋषयो रोमकूपेषु चर्मण्येव प्रजापतिः।।

गो की कटि (कूल्हे) में पितृगण, पूँछ में देवता, रोमकूपों में ऋषिगण और उसकी चमड़ी में प्रजापति निवास करते हैं।

हुङ्कारे चतुरो वेदा हुंशब्दे च प्रजापतिः ।
एवं विष्णुमयं गात्रं तासां गोप्ता स केशवः।।

गो की "हुं" ध्वनि में चारों वेद और "हुं" शब्द में प्रजापति का निवास है। गो का सम्पूर्ण शरीर विष्णुमय है और स्वयं केशव उसकी रक्षा करते हैं।

गवां दृष्ट्वा नमस्कृत्य कृत्वा चौव प्रदक्षिणम्।
प्रदक्षिणीकृता तेन सप्तद्वीपा वसुन्धरा।।

जो व्यक्ति गो को देखकर नमस्कार करता है और उसकी प्रदक्षिणा करता है, वह मानो सम्पूर्ण सप्तद्वीपी पृथ्वी की परिक्रमा कर लेता है।

कामदोग्ध्री स्वयं कामदोग्धा सन्निहिता मता।
गोग्रासस्य विशेषोऽस्ति हस्तसम्पूर्णमात्रतः।।

गोमाता स्वयं कामधेनु हैं, जो मनोवांछित फल देने वाली हैं। हथेली भर अन्न जो गो को समर्पित किया जाए, वह भी अत्यंत पुण्यप्रद है।

शतब्राह्मणभुक्तेन सममाहुर्युधिष्ठिर ।
य इदं पठते नित्यं शृणुयाद्वा समाहितः।।

हे युधिष्ठिर! जो इस स्तोत्र का नित्य पाठ करता है या श्रद्धा से सुनता है, वह शतब्राह्मणों को भोजन कराने के समान पुण्य प्राप्त करता है।

ब्राह्मणो लभते विद्यां क्षत्रियो राज्यमश्नुते ।
वैश्यो धनसमृद्धः स्याच्चूद्रः पापात् प्रमुच्यते।

इस स्तोत्र के पाठ से ब्राह्मण को विद्या, क्षत्रिय को राज्य, वैश्य को धन-समृद्धि और शूद्र को पापों से मुक्ति प्राप्त होती है।

गर्भणी जनयेत् पुत्रं कन्या भर्तारमाप्नुयात् ।
सायं प्रातस्तु पठतां शान्तिस्वस्त्ययनं महत्।।

गर्भवती स्त्री इस स्तोत्र के प्रभाव से पुत्र को जन्म देती है और कन्या को उत्तम पति प्राप्त होता है। जो इसे प्रातः-सायं पढ़ता है, उसे महान् शांति और कल्याण मिलता है।

अहोरात्रैंतैः पापैस्तत्क्षणात् परिमुच्यते ।
फलं तु गोसहस्रस्येत्युक्तं हि ब्रह्मणा पुरा ।।

दिन-रात किए गए पापों से मनुष्य तत्काल मुक्त हो जाता है। इस स्तोत्र का फल स्वयं ब्रह्मा ने गोसहस्रदान के समान बताया है।

गावो मे ह्यग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः।
गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्।।

मेरे आगे, पीछे और हृदय में सदैव गोमाताएँ रहें, मैं सदा उनके मध्य निवास करूँ।

सुरभिर्वैष्णवी माता नित्यं विष्णुपदे स्थिता।
गोग्रासं तु मया दत्तं सुरभिः प्रतिगृह्यताम्।।

सुरभि वैष्णवी माता सदैव विष्णु के चरणों में स्थित हैं। हे सुरभि! यह गोग्रास (गोभोजन) जो मैंने दिया है, कृपया इसे स्वीकार करें।

गावो मे मातरः सर्वाः सर्वे मे पितरो वृषाः।
ग्रासमुष्टिं मया दत्तं सुरभिः प्रतिगृह्यताम्।।

सभी गोएँ मेरी माता हैं और सभी बैल मेरे पिता हैं। हे सुरभि देवी! यह अन्नमुष्टि जो मैंने दी है, कृपया स्वीकार करें।

फलानां गोसहस्रस्य प्रदद्याद्ब्राह्मणोत्तमे।
सर्वतीर्थाधिकं पुण्यमित्युक्तं ब्रह्मणा पुरा।।

इस स्तोत्र का पाठ उत्तम ब्राह्मण को देने पर गोसहस्रदान से भी अधिक पुण्य प्राप्त होता है। ऐसा विधान स्वयं ब्रह्मा जी ने कहा है।

श्री राम कथा

पू. आचार्य श्री दयानंद शास्त्री जी महाराज

पिछले अंक से आगे........

इसका मतलब हुआ चंद्रमा सत् है और सत् के प्रभाव से गंगाजल में दिखने वाला चंद्रमा का प्रतिबिंब भी सत् है। ऐसे ही जगदात्मा नारायण श्री सीताराम सत् है, श्री राधा गोविंद सत्य है, श्री लक्ष्मी नारायण सत्य है और उनके सत्य होने के कारण मिथ्या जगत भी हमें सत्य प्रतीत होता है। बोलो भक्तवत्सल भगवान की जय!

यत्सत्त्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः।
अयत्पादप्लवमेकमेव हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां।
वन्देऽहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम्।।

जिनकी सत्ता से रस्सी में सर्प के भ्रम की भाँति यह सारा दृश्य जगत सत्य ही प्रतीत होता है और जिनके केवल चरण ही भवसागर से तरने की इच्छा वालों के लिए एकमात्र नौका हैं, उन समस्त कारणों से पर (सब कारणों के कारण और सबसे श्रेष्ठ) राम कहलाने वाले भगवान श्रीहरि की मैं वंदना करता हूँ!

तरने की इच्छा वाले संसार में जितने लोग हैं, जीने वाले तो कई अरब लोग हैं, लेकिन तरने की अभिलाषा वाले अरब नहीं है, थोड़े ही हैं, उनकी संख्या विरल है। हम तर जाएं ऐसी अभिलाषा करने वाले किंचित-किंचित ही लोग होंगे। तो कहा- तरने की अभिलाषा वाले जितने जीव है, जो चाहते हैं मेरी गति हो, मेरी मुक्ति हो, मैं तर जाऊं उनके लिए साधन क्या होगा? बोले '**अयत्पादप्लवमेकमेव हि**' भगवान के चरण ही हमारे तरने के जहाज हैं। भगवान के चरणों से विमुख जीव तर नहीं सकता, उसका डूबना तय है। इसलिए तरने की अभिलाषा जब मन में आए तो भगवान के चरणों का आश्रय ग्रहण करना चाहिए। सूरदास जी ने गाया है-

चलो रे सखी चरण जहाज!
तज पाखण्ड और चतुराई,
सुमिरो श्री गोकुलराज!

भगवान के चरणों को जहाज कहा। कहा कि यही जहाज है, यही जहाज है, यही भवसागर से तरने के लिये जहाज है। यही तारता है। सज्जनों! चरण जाहज हमको मिल गया है लेकिन हम चढ़ते नहीं है। हम उड़ना चाहते हैं। समुन्द्र में जहाज होता है, उसके ऊपर बैठा पक्षी समुन्द्र में उड़ना है, बहुत दूर तक जाता है लेकिन समुन्द्र को लांग नहीं सकता, थक हार कर पुनः जहाज पर आकर विश्राम पाता है ऐसे ही हम संसार के जीव कितनी भी दौड़ लगा लें लेकिन थक हार कर भगवान के चरण रूपी जहाज पर ही जाना पड़ेगा। इस चरण नौका से ही किनारे लगना होगा। बोलिये भक्तवत्सल भगवान की जय!

चरण जहाज यही है। समुन्द्र रूपी इस संसार में कहीं भी उड़ान भरते रहो, बैठने के लिये कोई वृक्ष, कोई ठौर नहीं मिलेगी, इस चरण जहाज के सहारे ही पार लगना है। यह एक है, विकल्प नहीं है। **अयत्पादप्लवमेकमेव हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां।** तृषु जीव के लिये भगवान के चरण ही आश्रय है। इसी जहाज पर चढ़कर जीव संसार से तर सकता है। **तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम्।** प्रलयकाल में भी शेष शेष रह जाते हैं। उन शेष के भी कारण प्रभु परमात्मा हैं, उन्हीं को रामजी कहा गया है। इतना गम्भीरता से इस विषय को लेने का बाबा तुलसीदास जी का तात्पर्य क्या रहा? एक बात उस जमाने में फैल गई थी कि-

एक राम दशरथ घर डोले,
एक राम घट-घट में डोले।
एक राम का सकल पसारा,
एक राम तिरभुवन से न्यारा।।

तो इससे झमेला हो जायेगा, लोग समझ नहीं पायेंगे कि राम तत्व क्या है। इसलिये बता दिया कि **'रामाख्यमीशं हरिम्'** - जिस हरि की वंदना हमने करने जा रहे हैं वो रामजी हैं और उन्हें दशरथ नंदन सिद्ध करके हम पुनः इस वार्ता पर लौटेंगे और आइये अब हम मंगलाचरण को पूर्ण करते हैं।

नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद्
रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि।
स्वान्तःसुखाय तुलसी रघुनाथगाथा
भाषानिबन्धमतिमंजुलमातनोति।।

अनेक पुराण, वेद और (तंत्र) शास्त्र से सम्मत तथा जो रामायण में वर्णित है और कुछ अन्यत्र से भी उपलब्ध श्री रघुनाथजी की कथा को तुलसीदास अपने अन्तःकरण के सुख के लिए अत्यन्त मनोहर भाषा रचना में विस्तृत करता है।

बहुत दिव्यता है आपके पावन ग्रन्थ में इसकी अमोघता को हे हरि भक्तों! नाना पुराण, निगमागम सम्मतम्, आपके 18 पुराण, 52 उप पुराण, 108 उपनिषद, अर्वाचीन उपनिषदों और हमारे 6 शास्त्रों में जो कथाएं हैं और कहा पूर्व के आदि कवि श्री वाल्मीकि जी ने रामचरित्र को जैसा भी सर्जन किया वो भी इसमें समाये हुए हैं और फिर कहा **'क्वचिदन्यतोऽपि'** कुछ और भी कथाएं वो बाबा तुलसी का आत्म अनुभव, उन्होंने प्रभु श्री राम को जैसा देखा, पाया, समझा, उन साक्षात्कारी महात्मा ने अनेकों बार राम छवि को देखा है तो उनको जो रामजी के बारे में ज्ञान अंतःकरण में प्रकट हुआ वो भी इसमें समाविष्ट किया और कहा कि हे हरि भक्तों! ध्यान रखिये, मेरी यह पोथी आपके लिये भार नहीं है। आपको पसंद नहीं तो आपके लिये हेवी (भारी) नहीं। बोलो भक्तवत्सल भगवान की जय!

साधु कोई भी कुछ भी करते हैं तो किसी पर भार नहीं, किसी पर कुछ थोपते नहीं। किसी पर भार बनने के लिये साधु ने जन्म नहीं लिया संसार में। बाबा ने कहा यह आत्म ग्रंथ, यह हरि कथा हमने जो भी भगवत् कृपा से की है इसमें आपको कोई पीड़ा न हो जाए कि ऐसा क्यों लिखा, वैसा क्यों लिखा, यह आत्मबोध है। इस पर बहुत बातें बनती है, तुलसी बाबा के इस मंगलाचरण को ठीक से पढ़ने वाला वक्ता भी गलती ना कर सकते। तो लोग इसको आगे मथने में लग जाते हैं।

इसलिये बाबा ने कहा सज्जनों! हम आप पर लादने के लिए कुछ भी नहीं कर रहे। आप मेरी बात मानो, ऐसा भी नहीं कहा। आपको ऐसे वक्ता भी कभी जीवन में प्राप्त नहीं होंगे जैसा कि तुलसीदास जी हमारे हो चुके हैं। उन्होंने आपको कभी श्रोता नहीं बनाया। मानस के प्रत्येक प्रकरण में पाएंगे कि उन्होंने मन को श्रोता बनाया- अरे मेरे मन तू सुन ले, तू सुन ले, तू सुन ले। हम श्रोता बनें तो मना नहीं है, पर उन्होंने तो अपने मन को श्रोता बनाया। अब देखो इस पंडाल में निमंत्रित लोग, हम सब लोग हैं जो हमारे प्रेमी भक्ति एक-एक प्रेमियों को जिनका भाव भगवान में जुड़ा हुआ है उन सबको हम लोगों ने एक साथ यहाँ पर अह्वान किया।

पंडाल आज सबके लिये खुला हुआ है। संत, विरक्त, भक्त, प्रेमी जाने-अनजाने में, परिचित-अपरिचित, ऊंचे-नीचे, बड़े-छोटे सबके लिए आह्वान है। सब प्रेमी आकर राम कथा में विराजमान हों यहाँ, सबके लिए खुला दरबार है, राम दरबार है। राम दरबार में प्रतिबंध नहीं होता। भगवान का दरवाजा है यह एक ही दरवाजा है जहाँ बिना संकोच अंदर जा सकते हैं, किसी को रुकने की आवश्यकता नहीं, वह झट से अपने पैर आगे बढ़ा ले। राम दरबार में मना नहीं होती जो इस कथा में निमंत्रित है वो तो निमंत्रित हैं ही, पर जो हरि भक्त भगवत प्रेम से औतप्रोत है उनको पूरा पंडाल समर्पित है। वे आवे और हरि कथा को श्रवण करें।

तो बाबा तुलसी ने कहा-....... शेष अगले

शिव महापुराण कथा

(वेद मंदिर अहमदाबाद)

(पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्णजी महाराज)

पिछले अंक से आगे.....

वह संसारी व्यक्ति भक्त को कुकथा ही सुनायेगा, उसके पास कथा की बातें कहाँ? वह कुकथा सुना-सुनाकर भक्त के ह्रदय को, उसकी बुद्धि को पशु बुद्धि बना देगा और अगर वैष्णव का संग होगा, भक्तों का संग होगा तो हरि कथा सुनाकर, हर की कथा सुनाकर आपकी बुद्धि को भागवत बुद्धि बना देंगे।

श्रीमद् भागवत जी में दत्तात्रेय भगवान के 24 गुरुओं का प्रसंग आता है। उनमें एक गुरु ऐसे हैं दत्तात्रेय भगवान के, भृंगी नाम का कीड़ा। वो भृंगी नाम का कीड़ा क्या करता है बापू- वह किसी साधारण कीड़े को उसको कोई मतलब नहीं, किसी कीड़े मकोड़े को वह पकड़ कर और दीवार के छेद में बंद करके और रात दिन उसके चारों ओर बूम बूम बूम ऐसे घूमता रहता है। परिणाम क्या होता है उसके निरंतर वह बूम बूम बूम बूम बूम की वह ध्वनि को सुनते सुनते सुनते सुनते एक समय ऐसा आ जाता है की दीवार के छेद के अंदर जो कीड़ा बंद है वह मरता नहीं है, ध्वनि को सुनते-सुनते उसमें भी भृंगी कीड़े जैसी सामर्थ्य आ जाती है और वह भी भृंगी कीड़े के जैसा बन जाता है और उस दीवार के छेद को तोड़कर बाहर आ जाता है और उड़ जाता है।

अब आई बात समझ में। मैं यही आपको कहना चाहता हूँ कि कुकथा सुनोगे तो दुर्बुद्धि हो जाएगी और भक्तों के साथ रहकर बार-बार भगवत कथा सुनोगे, शिव कथा सुनोगे, हरि कथा सुनोगे तो आप भी सद्बुद्धिमान हो करके अपने भवबंधनों को तौड़ दोगे। भृंगी कीड़े की आवाज का चिंतन एक साधारण कीड़े को अगर मुक्त कर सकता है तो भक्तों की वाणी का चिंतन, संतों की वाणी का चिंतन, शास्त्र वाणी का चिंतन क्या हमें इस भवबंधन से मुक्त नहीं करेगा?

ऐसा ही एक शहर था, नगर था करुणानिधान! उसमें एक बिंदुक नाम का ब्राह्मण था उसकी पत्नी थी चंचुला। अब पत्नी तो सही थी, पति गड़बड़ था। अब पत्नी आस करने लगी कि यह सुधार जावे! सुधार जावे! सुधार जावे! विनती भी करती, बोलती भी सब कहती लेकिन पति के चरित्र में, पति के स्वभाव में कोई सुधार नहीं हुआ तो एक दिन इसने सोचा मैं क्या करूं पति को कुसंग में पड़ा था तो इसने कहा अपने भी कुसंग में पड़ जाओ। वो भी कुसंग में पड़ गई। पति ने कहा मेरे जैसा चरित्र तू अपना क्यों बनाती है? उसने कहा फिर आप अपना चरित्र बिगाड़ सकते हो तो मैं क्यों नहीं बिगाड़ सकती? पति ने कहा बात तो तूने सही कही, जब मैं बिगाड़ सकता हूँ तो तूं क्यों नहीं बिगाड़ सकती।

अभी तीन-चार साल पहले किसी परिवार में सगाई संबंध का प्रसंग आया। आजकल सगाई होती है लड़का-लड़की मिलते हैं। तो लड़का लड़की मिले लड़की वाले मेरे परिचित थे तो मैंने उनको पूछा कि आप अपनी बेटी की सगाई के लिए गए थे सो क्या हुआ? संबंध बना कि नहीं बना? बात नहीं बनी महाराज जी। हमने कहा क्यों नहीं बैठी? बोले महाराज जी लड़के ने एक बात ऐसी कही जिससे हमारे बात बैठी नहीं। हमने पूछा ऐसा क्या कह दिया? अपने करना नहीं करना अलग बात है लेकिन पंचायती सबकी करते हैं। तो उन्होंने कहा कि महाराज लड़के ने हमारी बेटी को कहा कि देखो हम ब्याह कर लेंगे, साथ में भी रहेंगे लेकिन मैं कुछ करूं तो तुम मुझे मत रोकना और तुम जो करना हो करना मैं तुम्हें नहीं टोकूंगा। इस पर तैयार हो तो आगे बात करें। अब आप ही बताओ, इसका मतलब क्या होता है? बताओ तुम मुझे मत टोकना तू जो करे वह मैं तेरे

को नहीं टोकूंगा। मेरे भाई बहन विवाह का मतलब पराधीनता नहीं है, लेकिन विवाह का मतलब जीवन को एक मर्यादा में लाना है। मेरे भाई बहन बुरा मत मानना, पहाड़ों में बहने वाली नदी की कौन आरती करता है? पहाड़ों के बीच में से बहने वाली नदी का कौन पूजन करता है, लेकिन वही नदी जब किसी घाट के साथ जुड़ती है तो उसकी आरती होती है उसकी पूजा होती है उसमें उसका उत्सव होता है। यह नदी की पराधीनता थोड़े ही है, यह नदी की स्वीकार्यता है। यह नदी की पराधीनता नहीं है, इससे नदी का महत्व बढ़ता है। ऐसे ही अगर किसी कन्या को किसी अच्छे घर में इस मर्यादा से रहने का अवसर मिलता है तो वह पराधीनता नहीं है, यह उसकी स्वीकार्यता है, उसका महत्व बढ़ता है। लेकिन कौन तैयार है इसमें, समझ में ही नहीं आता है। जो भी हो तूं मुझे मत टोक और मैं तूझे नहीं टोकूंगा। फिर विवाह करते क्यों हों?

खैर कोई बात नहीं, अपनी कथा सुनो आप तो। पति ने कहा ठीक है, मैं भी बिगड़ गया तूने इतने दिन सुधारने की कोशिश की मैं नहीं सुधरा तो तूं भी बिगड़ गई तो ठीक हैं तूं भी तेरी मरजी आवे वैसे रह और मैं मेरी मरजी वैसे करूं। दोनों एक सरीके हो गए। मेरे भाई-बहन यहाँ एक बात कहूंगा कि अगर किसी माता बहनों के जीवन में ऐसा प्रसंग आ जाए कि पति चरित्रहीन प्राप्त हो गया है, पता नहीं था और विवाह हो गया, अब क्या करें? पति का कोई दोष है, पति में कुछ चारित्रिक विकृति इस प्रकार की है। मेरे भाई-बहन स्वभाव की कोई विकृति है तो ज्यादा विचार मत लाना। भाई स्वभाव का तो हम क्या कह सकते हैं, सबक अलग-अलग होते हैं। 'तुलसी या संसार में भांति भांति के लोग' लेकिन चरित्र की खराबी है, कोई व्यसन है तो फिर सहन नहीं करने की बात है, बाकी क्रोध आता है, ज्यादा बात नहीं करते हैं, उपहार नहीं देते हैं, यह सब बातों का कुछ नहीं। ठाकुर जी ने एक उपहार दे दिया है श्वासों का, इससे बड़ा उपहार कोई दे सकता है क्या? जब श्वास कम पड़ जाए तब 10 किलो सोना देकर भी कोई श्वासें ला सकता है? बोलिए अरबपति खरबपति पड़े रहे अस्पतालों में भैया माफ करना मेरी बात अप्रिय लगे तो कोई ला सका श्वासें? लो जितना चाहिये उतना ले लो लेकिन हाय हाय श्वासें दे दो, एक श्वास नहीं मिली करोड़ों रुपया खर्च करने पर भी। वो श्वासें हमें भगवान से मिली है, उससे बड़ा उपहार कौन किसका पति दे सकता है बताओ। इस उपहार के आगे ये छोटे-मोटे उपहार कोई दे न दे उससे क्या फर्क पड़ता है।

मेरे भाई बहन! स्वभाव की विकृति को क्या देखना! स्वभाव की विकृति को क्या देखना! भैया तपती दोपहरी में भी मजदूर मजदूरी करता है। बस यही सोचो कि यह सब तपती दुपहरी हे और हमको हमारा कर्तव्य पालन करना है। इससे परमात्मा प्रसन्न होते हैं। धूप देखकर मजदूर अगर छांव में रह जाता है तो उसका ठेकेदार उस पर प्रसन्न नहीं होता है मगर तपती दुपहरी में भी मजदूर काम करता रहता है तो उसका ठेकेदार प्रसन्न होता है और शाम को उसकी मजदूरी बढ़ जाती है। परिवार की प्रतिकूलता के बाद भी, परिवार के सदस्यों के द्वारा विपरीत व्यवहार के बाद भी आप अपने कर्तव्यों का पालन करते हो तो आपके प्रति परमात्मा की प्रसन्नता बढ़ेगी, आपके ऊपर परमातमा की कृपा बढ़ेगी।

मैंने ऐसी कई माता बहनों को देखा है जिनके परिवार के सदस्यों का बड़ा विकेट स्वभाव मानो घर में हिरण्याक्ष-हिरण्यकशिपु बैठे हैं, लेकिन उसके बावजूद भी अपना कर्तव्यपालन बराबर उन्होंने किया तो वे अपने जीवन में भगवान की प्रसन्नता को अनुभव कर रही हैं। प्रभु ध्यान दीजिए पति की विकृति को देखकर के स्त्री भी अपना चरित्र बिगाड़े ऐसा काम ना करें।...........शेष अगले अंक में

गोसेवक अपने कर्त्तव्यपान की समीक्षा स्वयं करें

(पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्णजी महाराज)

16 जनवरी सुरभि संसद, नंदगांव

हम लोग वर्ष में यहां एकत्रित होते हैं कभी कार्यकारिणी की बैठक के निमित्त से, कभी सुरभि संसद के निमित्त से, कभी किसी उत्सव के निमित्त से, कभी गो नवरात्रि के निमित्त से और हर बार हम लोग निश्चित रूप से गोपरक चर्चाएं, गोमहिमा परक चर्चाएं, गोसेवा, गोसंवर्धन से संबंधित चर्चाएं करते हैं। बात कहने में मन आज कुछ अलग सा हो रहा है कि सभी लोगों को ठाकुर जी ने इस अभियान में कुछ न कुछ सेवा कार्यों के लिए निमित्त बनाया है जो पूर्व में हमारे कर्णावती के घेवर जी ने पदाधिकारियों के कार्यो की समीक्षा की बात कही और हमारे श्री अर्जुन सिंह जी ने भी समीक्षा की बात कही वो वास्तव में समीक्षा का प्रश्न इसलिए है क्योंकि मैं आप लोगों के लिए तो कुछ नहीं कहूंगा किंतु मैं अथवा मेरे जैसे ऐसे बहुत जन हैं जो अपनी पूरी क्षमता से सेवा कार्य में प्रवृत नहीं हो पा रहे हैं। देखिए क्षमता तो ठाकुर जी सबको देते ही हैं, दूसरी बात यह भी है कि ठाकुर जी किससे कितना काम लेना चाहते हैं, गोमाता किससे कितना काम लेना चाहती है, वो तो वे ही जाने, लेकिन फिर भी ऐसे प्रसंगों पर हम लोगों के मन में यह चिंतन तो उठता ही है कि जब हम यहाँ अवलोकन करते हैं कि कार्य कितना बड़ा है।

श्री महाराज जी ने कहा कि जब से गोवर्धन नाथ जी पधारे हैं तब से कार्य बढ़ता ही जा रहा है, पर हम तो देखते हैं कि जबसे दत्तनाथ जी पधारे तब से ही बढ़ रहा है। श्री गोवर्धननाथजी तो आपका वात्सल्य पाने के लिए आए हैं, आपका स्नेह पाने के लिए आए हैं, क्योंकि हमारे श्री महाराजजी का स्नेह, वात्सल्य अत्यंत-अत्यंत दुर्लभ है और श्री ठाकुर जी को दुर्लभ वस्तु ही प्रिय लगती है। सुलभ तो सबके लिये सुलभ है। श्री महाराज जी का जो स्नेह, वात्सल्य है वह अत्यंत-अत्यंत दुर्लभ है, कई बार किसी सौभाग्यशाली ने उसका कुछ कण-अंश अनुभव किया हो तो वह बहुत ही सौभाग्यशाली है। तो गोवर्धननाथ जी तो वात्सल्य भाजन हैं, आपके वात्सल्य में रहने के लिए आए हैं तो वे तो आपके वात्सल्य का, आपके स्नेह का खूब सुख लूटे हम तो यही चाहते हैं। ब्रज का एक भाव है कि लाला सुखी रहना चाहिए बस और जो होना हो सो हो, पर लाला सुखी रहना चाहिए। तो बस यह जो लाला है गोवर्धन नाथ लाला है ये लाला सुखी रहने चाहिए और लाला का लाड़-दुलार करने वाले आप स्वस्थ रहें, प्रसन्न रहें। आपकी प्रसन्नता इसी में है कि गाएं सुखी रहे, स्वस्थ रहें, संवर्धन होता रहे। इसलिये मेरा निवेदन है कि इस अधिवेशन के उपरांत हम सब लोग अपने-अपने कर्तव्यपालन की, अपने-अपने कार्यों की क्यों न खुद ही समीक्षा करें। घेवर जी ने कहा, अर्जुन सिंह जी ने कहा लेकिन अब आप ही बता दीजिए की कार्य की समीक्षा करेगा कौन? आपके कार्यो की समीक्षा कौन करेगा? धणी रो कुण धणी (स्वामी का कौन स्वामी) स्वामी की समीक्षा कौन करेगा? आप सब केंद्रीय पदाधिकारी जो हैं, आप तो संस्था के कार्मिकों की समीक्षा करें, पर आपकी समीक्षा कौन करें? श्री महाराज जी अपनी करूणा कृपा से, हम कुछ करें तो भी हम पर अनुग्रह करते हैं और मेरे जैसे कुछ ना भी करें तो भी अनुग्रह करते हैं। अगर हम सोचें कि श्री महाराज जी हमारी समीक्षा करें तो महाराज जी की समीक्षा तो यह है आप लोग सुन लीजिए।

महाराज जी तो कभी किसी को नहीं कहेंगे कि भाई आप महामंत्री होकर के यह काम नहीं कर रहे हैं, आप प्रमुख होकर के यह काम नहीं कर रहे हैं, आप अमुक होकर यह काम नहीं कर रहे हैं। आपको असम की जिम्मेदारी दी है आप असम में कुछ नहीं कर रहे, आपको छत्तीसगढ़ की जिम्मेदारी दी वहाँ कुछ नहीं कर रहे हैं। महाराज जी कभी अपने मुख से यह कहने वाले नहीं हैं। श्री महाराज जी समीक्षा करेंगे नहीं। ठीक

है हम महाराज जी के समीप आते-जाते हैं, उनके भावों से समझ लेवें वह अपना एक अच्छा पक्ष रहेगा, किंतु महाराज जी की ओर से कभी समीक्षा होगी नहीं और बाकी सब बड़े हैं और कौन उनको कहेगा कि भाई आपके पास में इतना दायित्व है, आप यह काम नहीं कर रहे हो? मुझे लगा कि सबसे बड़ा प्रश्न तो मेरे को लेकर ही आया है। तो हम सबको अपनी-अपनी समीक्षा स्वयं ही करनी पड़ेगी।

हमें जो दायित्व मिला है वह दायित्व किसी योग्यता या प्रभाव के कारण नहीं मिला है। देखिए किसी संस्था में कोई दायित्व दिया जाता है तो वह प्रभाव के कारण दिया जाता है। आप लोग देखते ही हैं देश में कई सारी संस्थाएं हैं कोई एकाध अपवाद रूप हो सकती है, पर ज्यादातर संस्थानों में जो दायित्व दिया जाता है वह उस व्यक्ति के प्रभाव को देखकर के दिया जाता है, लेकिन मुझे यह बताने में बहुत गर्व होता है कि यहाँ श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा जो हमारी संस्था है इसमें ऐसी बात नहीं है।

हम जब यहाँ आए तब चर्चा चल रही थी कि संस्था का अध्यक्ष किसे बनाएं? तो आपको बताएं कि हमारे पास जो सूची आई कि ये बहुत प्रभावशाली व्यक्ति है इनमें से किसी को बना दिया जाए। अध्यक्ष पद के लिये अमुक की पृष्ठभूमि में सामाजिक प्रभाव बहुत है, अमुक की पृष्ठभूमि में संपत्ति भी बहुत है, अमुक की पृष्ठभूमि में उनकी राजनैतिक प्रसिद्धि भी बहुत है, लेकिन श्री महाराज जी ने कहा कि हमें अध्यक्ष पद के लिये ऐसे व्यक्ति का चयन करना है जिसकी पृष्ठभूमि में गोसेवा हो, गोभक्ति के संस्कार हो। नहीं तो किसी ऐसे जबरदस्त प्रभावशाली व्यक्ति का चयन कर लेते जो कई सारे काम करवा देता है, अर्थ की दृष्टि से समझ लो, चाहे प्रशासनिक सरकारी दृष्टि से समझ लो लेकिन इस प्रकार का चयन किया गया कि जिनकी पृष्ठभूमि में गोसेवा है। सभी लोगों ने शुभकामनाएं दी है मैं भी क्यों पीछे रहूँ। इसलिए हमारे नवनियुक्त अध्यक्ष महोदय श्री राकेश जी बिंदल को बहुत-बहुत बधाई देता हू आपके पूज्य पिताजी से जो गोभक्ति के, गोसेवा के संस्कार आपको मिले हैं वे ही आपको यहाँ इस पद तक लाने के लिए सहायक बने हैं। इसलिये हम सब लोग अपनी-अपनी समीक्षा खुद ही करके और अपने-अपने दायित्व को अच्छा बनाएं ऐसी सभी से विनती है।

तो मैं जो बात कह रहा था कि हमें जो-जो दायित्व मिले हैं वो अपनी कोई योग्यता से या किसी प्रभाव से मिले हैं ऐसा हमें सोचना नहीं चाहिए। हमको जो भी दायित्व मिले हैं यह सब कुछ सिर्फ ठाकुर जी का हम पर प्रेम है इसलिये वे ही मौका दे रहे हैं। जोधपुर में पूर्व में कोई सरकार थी उस सरकार ने वहाँ के एक व्यक्ति को किसी बोर्ड का चेयरमेन बनाया तो लोगों ने कहा कि भाई इस व्यक्ति में कोई योग्यता नहीं है, इतनी समझ नहीं फिर इनको कैसे बना दिया? तो किसी ने कहा कि यह जो सरकार के प्रमुख हैं उनके बचपन के दोस्त हैं इसलिये बना दिया। कहने का मतलब यह है कि हमें जो यह चीज मिली है, यह गोपाल कृष्ण भगवान के प्रेम के कारण मिली है, उनका हमारे ऊपर कहीं प्रेम है तब उन्होंने हमको ऐसी जगह पर भेज दिया, बाकी हम सब सब अपने अंतरात्मा में विचार करें तो इतना सारा बड़ा काम अकेले महाराज जी के श्रम से ही हो रहा है।

इसलिए भैया हमें विचार करना है कि हमें अपने-अपने दायित्वों का भलीभांति निर्वहन कर पूरे पथमेड़ा अभियान की जय जयकार करवानी है। पूरे पथमेड़ा अभियान की जय जयकार में श्री महाराज जी की प्रसन्नता है, श्री ठाकुरजी की प्रसन्नता है। तो इस प्रकार का विचार हम सब लोगों को करना चाहिए कि हम सब अपने-अपने कार्यो की समीक्षा करें कि कैसे हम अपनी भूमिका को और अधिक से अधिक सुदृढ़ कर सकते हैं कैसे अपने कार्यो को और अधिक कर सकते हैं। यदि ठाकुर जी ने प्रेम करके हमको यह जगह दे दी तो हमारे में ऐसी पात्रता नहीं कि हम भी उनको कोई जगह दें। इसलिये हमें उनके प्रेम के बदले में गोसेवा करके प्रसन्नता देनी है। यह हमको अपने मन में सोचना चाहिए, फिर प्रारंभ में विशेष

उद्बोधन तो श्री महाराज जी का हुआ है और महाराज जी ने दास के लिए कहा था कि भाई इनको उत्साह दीजिये कि संकोच रहित होकर सभी स्थानों पर गोसेवा की अपील कर सकें। दास पूरा प्रयास करेगा।

आप सब गोसेवा कार्यो में लगे हुए जन हैं, देखिए सब तो पदाधिकारी नहीं होंगे और पदाधिकारी तो सिर्फ एक नाम है। आप इतना समझ लीजिए गौशाला में कौन पदाधिकारी होता है? गौशाला में कोई पदाधिकारी नहीं होता है। पदाधिकारी तो कोई स्कूल, हॉस्पिटल, कॉलेज में होते हैं। गौशाला में तो कोई पदाधिकारी नहीं है। यह तो एक व्यवस्था के नाते बनाई गई रचना है। तो सभी का उत्साहवर्धन होना चाहिए और सबका उत्साह वर्धन कैसे कर सकते हैं?

आप लोग जब भी गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के किसी भी दायित्वप्राप्तकर्ता से मिलें तो उससे अधिकार पूर्वक पूरी जानकारी मांगे यह सबसे बड़ा उत्साहवर्धन है। आप लोग मिलते हैं तो कुछ पूछते ही नहीं हैं। आप लोग दायित्वधारियों से पूछेंगे कि बताइये अभी संस्था में क्या चल रहा है, चारे की क्या स्थिति है, आगामी कोई कार्यक्रम कब है, तभी तो उनका उत्साह वर्धन होगा। तभी तो हम सभी को यह अनुभव होगा कि हाँ भाई लोग हमको वहाँ सब पूछते हैं। एक शिष्य को गुरु जी का खास होने की फीलिंग कब आती है, जब लोग उससे गुरुजी के बारे में पूछते हैं। इसी प्रकार हमारा उत्साह तब बढ़ेगा जब आप संस्था के बारे में हमसे अधिक से अधिक पूछोगे।

मेरी एक विनती है, आप सब लोगों से- श्री महाराज जी ने आप सभी लोगों को कुछ बिंदु भेजे थे कि आप इस बारे में अपने-अपने सुझाव लिख करके भेजें। किंतु विशेष अधिक कोई सुझाव किसी से प्राप्त नहीं हुए। वास्तव में हम में से बहुत सारे लोग यही सोचते हैं कि महाराज जी जो चिंतन करते हैं, महाराज जी जो विचार करते हैं वह सबसे सही है इसलिए हमें तो जो काम बताएंगे वह हमको करना है। यह हमारे अंत:करण का बहुत अच्छा परिचय है और जो श्रद्धा और भाव है महाराज जी के प्रति वह बहुत सुंदर है। भरत चरित्र में एक प्रसंग है कि श्री राम जी के मन में एक खेल खेलने की इच्छा हुई। अब खेल खेलने के लिए दो दल होना बहुत जरूरी है। लेकिन अब राम जी के विपक्ष वाले दल में आने के लिये कोई तैयार नहीं हुआ तब भरतजी ने खड़े होकर कहा कि प्रभु मैं आपके सामने खेलूंगा। तो लोग कहने लगे आप तो रामजी से इतना प्रेम करते हैं, आप उनके सामने आ गए? आप रामजी के प्रतिद्वंदी बनोगे? तो भरतजी ने कहा कि मुझे सामने क्यों नहीं आना चाहिए? मैं रामजी से प्रेम करता हूँ इसीलिए प्रतिद्वंदी भी बनूंगा। मेरा काम सिर्फ उनके पीछे-पीछे रहना नहीं है, रामजी की जो इच्छाएं हैं वे कैसे पूरी हो यह भी करना मेरा काम है।

तो निश्चित रूप से महाराज जी के अनुगत रहकर ही यह कार्य करना लेकिन यदि महाराज जी चाहते हैं कि हमारे मन में भी इन विषयों के प्रति कुछ भाव आवे, चिंतन हो और उसको महाराज जी जाने और उसमें से कुछ-कुछ का चयन करके क्रियान्वित हो। इसलिये हम सब लोगों को सुझाव निश्चित रूप से देने चाहिए। देखिए सिर्फ सदस्यता शुल्क दे दिया और अपने इतिश्री कर ली ऐसा तो क्लाबों में होता है। क्षमा कीजिये यह क्लब नहीं है यह गोसेवा महा अभियान है। आपने सेवा के अभियान में अपनी एक ईट लगाई है इसलिए यहाँ सिर्फ आने जाने से काम पूरा नहीं होगा। आपको चिंतन करना पड़ेगा, सुझाव देना पड़ेगा ऐसी आप सबसे विनती है। अभी मैंने ऐसा भी सोचा था बैठे-बैठे कि इस अधिवेशन में 2700 लोगों ने आने की स्वीकृति दी थी, लेकिन आये मात्र 300 जन। आपने पहले हाँ भरी और फिर नहीं आये तो आपकी वाणी का क्या महत्व है? अगर आपकी स्वीकृति को मानकर प्रबंधन यहाँ 2700 जन की व्यवस्था कर देता तो गोमाता की कितनी निधि व्यर्थ हो जाती। इसलिए इस विषय में मेरा एक सुझाव है कि आगे

से इस प्रकार के जब भी अधिवेशन आदि हो तो उसमें भाग लेने वालों की स्वीकृति के साथ-साथ में एक छोटा सा व्यवस्था शुल्क भी लिया जाए जिसके कारण उनका आना थोड़ा और सुनिश्चित हो जाए।

एक बात मेरे मन में भी आई कि हालांकि श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा गोसेवा महाअभियान ने पूरे क्षेत्र को नहीं, पूरे विश्व को दिया है लेकिन एक बहुत बड़ी बात हमारे क्षेत्र के जो प्रवासी लोग हैं उनको गोसेवा की प्रेरणा इस अभियान से प्राप्त हुई और वे लोग अपने उपार्जन का एक हिस्सा जो है गोमाता के गोग्रास में अर्पण करते हैं, यह परंपरा आज भी बनी हुई है। अभी आप लोगों ने देखा चलते-चलते कुछ गोभक्तों ने सेवा निधि अर्पण की और आप लोग करते ही रहते हो। तो इससे यह हुआ कि आपका जीवन विलासी जीवन नहीं बना, आपका धन जो विलासिता में लगता और जीवन में तमोगुण, रजोगुण लाता वह सारा गोमाता की सेवा में अर्पण हो गया। इस सेवा के कारण आप उस विलासिता पूर्ण जीवन से बच गए, वैसी प्रवृत्ति से बच गए। आपको गोमाता और संतों की अपार कृपा और आशीर्वाद मिल रहा है और ईश्वर की प्रसन्नता प्राप्त हो रही है। यही नहीं बहुत सारे लोग इतने सारे जो इस क्षेत्र के लोग प्रवासी हैं उनका उपार्जन है वह कहीं ना कहीं इस अभियान में समर्पण होने से हजारों लोग जो है विलासिता पूर्ण जीवन से बच गए, भोगवादी से बच गए, तमोगुण से बच गए, रजोगुण से बच गए।

एक बात और दास के मन में आई कि हम लोग गोग्रास संकलन के लिये जो टीम बनाते हैं उसमें हमारे वरिष्ठ कार्यकर्ता ही शामिल होते हैं। मेरी ऐसी विनती है, प्रार्थना है कि हम लोग एक बार गोग्रास संकलन के लिए एक युवाओं की टीम भी तैयार करें और उनको साथ रखते हुए उनसे सुझाव भी लें और उनको इस सेवा में लगावें भी। दूसरी बात है कि छोटी-छोटी राशियों के भी गोग्रास संकलन हो इस पर भी हम लोगों को कार्य करना चाहिए। ऐसी कुछ बातें आप लोगों के आगे मैंने रखी है आप लोग इस पर सब चिंतन मनन करेंगे ही आगे होली के बाद में फिर से एक छोटा अधिवेशन होगा उसमें फिर से आप सब लोग उपस्थित होंगे।

ईश्वर की कृपा से इस आने वाले वर्ष में हम लोगों को एक और स्वर्ण संधि प्राप्त होने जा रही है कि पूज्यपाद जगतगुरु शंकराचार्य महाभाग द्वारिका शारदा पीठाधीश्वर स्वामी श्री सदानंद जी महाराज ने अपना चातुर्मास मय अनुष्ठान यहीं करने का निश्चय किया है। जगतगुरु पूज्यपाद द्वारिका शारदा पीठ के शंकराचार्य भगवान हमारे यहाँ पर निवास करेंगे उस अवधि में हम सभी को यहाँ होने वाले उत्सवों में उपस्थित रहकर के उनका आशीर्वाद, आशीर्वचन और उत्सव का आनंद प्राप्त करना है।

एक बात और आप लोगों के आगे रख रहा हूँ। अभी हमारे भारतवर्ष में श्री गोसम्मान आह्वान अभियान खूब प्रेम से चल रहा है। इस अभियान की सफलता के लिए हमारे गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा की ओर से बहुत सारी शुभेच्छाएं और शुभकामनाएं हैं अपने-अपने क्षेत्र में सभी गोभक्त, सभी गोप्रेमी इस अभियान में सहभागी हो, अपनी भूमिका सुनिश्चित करें, अपना सौभाग्य निभाएं ऐसा निवेदन है। इस अभियान के लिए खूब ठाकुर जी के चरणों में मंगल कामना करते हैं कि यह योजना जिन उद्देश्यों को पाने के लिये बनी है उसमें पूर्ण सफल हो। ऐसी श्री गोवर्धननाथ जी के चरणों में हम प्रार्थना करते हैं। ये कुछ भाव थे बाकी तो आप सब लोगों ने संतों को और कार्यकर्ताओं को सुना है। यह आपका अपना घर है, आप सबका पदार्पण यहाँ नियमित होता रहे। हमारे श्री गोवर्धननाथ जी का यहाँ बहुत ही सुंदर गो गोपाल कोरिडोर भी शीघ्र ही मूर्त रूप लेगा और यह भी हम सब लोगों के लिए एक आशीर्वादात्मक निधि होगी। संपूर्ण देश इसके प्रकाश से गोसेवा के भाव को प्राप्त करेगा ऐसी सब भावनाएं रखते हुए मैं अपनी बात को यहाँ विराम देता हूँ। जय गोमाता

परमपद

(जीव का अपना असली घर)

साभार : गीता साधक संजीवनी

पिछले अंक से आगे......

'यद् गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम'- जीव परमात्मा का अंश है। वह जब तक अपने अंशी परमात्मा को प्राप्त नहीं कर लेता, तब तक उसका आवागमन नहीं मिट सकता मतलब वह अपने असली घर नहीं जा सकता। जैसे नदियों के जल को अपने अंशी समुद्र से मिलने पर ही स्थिरता मिलती है, ऐसे ही जीव को अपने अंशी परमात्मा से मिलने पर ही वास्तविक स्थायी शान्ति मिलती है। वास्तव में जीव परमात्मा से अभिन्न ही है, पर संसार के(माने हुए)संग के कारण उसको ऊँच- नीच योनियों में जाना पड़ता है।

यहाँ 'परमधाम' शब्द परमात्माका धाम और परमात्मों दोनोंका ही वाचक है। यह परमधाम प्रकाश स्वरूप है। जैसे सूर्य अपने स्थान-विशेषपर भी स्थित है और प्रकाशरूपसे सब जगह भी स्थित है अर्थात् सूर्य और उसका प्रकाश परस्पर अभिन्न हैं, ऐसे ही परमध ाम और सर्वव्यापी परमात्मा भी परस्पर अभिन्न हैं।

भक्तों की भिन्न-भिन्न मान्यताओं के कारण ब्रह्मलोक, साकेत धाम, गोलोक धाम, देवीद्वीप, शिवलोक आदि सब एक ही परमधाम के भिन्न-भिन्न नाम हैं। यह परमधाम चेतन, ज्ञानस्वरूप, प्रकाशस्वरूप और परमात्मस्वरूप है। यह अविनाशी परमपद आत्म रूप से सबमें समानरूप से अनुस्यूत(व्याप्त) है। अत: स्वरूप से हम उस परमपद में स्थित हैं ही, परन्तु जड़ता (शरीर आदि) से तादात्म्य, ममता और कामना के कारण हमें उसकी प्राप्ति अथवा उसमें अपनी स्वाभाविक स्थिति का अनुभव नहीं हो रहा है।

परिशिष्ट भाव : हम भगवान के अंश हैं 'ममैवांशो जीवलोके' (गीता 15/7)। इसलिये भगवान का जो धाम है, वही हमारा धाम है। इसी कारण उस धाम की प्राप्ति होने पर फिर लौटकर संसार में नहीं आना पड़ता। जब तक हम अपने उस धाम में नहीं जायँगे, तब तक हम मुसाफिर की तरह अनेक योनियों में और अनेक लोकों में घूमते ही रहेंगे, कहीं भी ठहर नहीं सकेंगे। अगर हम ऊँचे-से-ऊँचे ब्रह्मलोक में भी चले जायँ तो वहाँ से भी लौटकर आना पड़ेगा 'आब्रह्मभुवनाल्लोका: पुनरावर्तिनोऽर्जुन' (गीता 8/16)। कारण कि यह सम्पूर्ण संसार (मात्र ब्रह्माण्ड) परदेश है, स्वदेश नहीं। यह पराया घर है, अपना घर नहीं। विभिन्न योनियों में और लोकों में हमारा घूमना, भटकना तभी बन्द होगा, जब हम अपने असली घर में पहुँच जायँगे।

परमपद को प्राप्त होकर फिर लौटकर संसार में न आने की बात गीता में तीन जगह कही गयी हैं

1-यं प्राप्य न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम। (8/21) जिसको प्राप्त होने पर जीव फिर लौटकर संसार में नहीं आते, वह मेरा परम धाम है।

2-तत: पदं तत्परिमार्गितव्यं यस्मिन्गाता न निवर्तन्ति भूय:। (15/4)
उसके बाद उस परमपद (परमात्मा) की खोज करनी चाहिये जिसको प्राप्त हुए मनुष्य फिर लौटकर संसार में नहीं आते हैं।

3-यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम। (15/6) जिसको प्राप्त होकर जीव लौटकर संसार में नहीं आते वही मेरा परमधाम है।

भगवान् ने ज्ञानमार्ग में तो अपुनरावृत्ति की प्राप्ति बतायी है- गच्छन्त्यपुनरावृत्तिं ज्ञाननिर्धूतकल्मषा:' (गीता 5/17) पर भक्तिमार्ग में अपने धाम की प्राप्ति बतायी है, यह भक्ति की विशेषता है! भगवान के धाम में प्रेम का विशेष आस्वादन होता है।

परमपद को न तो आधिभौतिक प्रकाश (सूर्य, चन्द्र आदि) प्रकाशित कर सकता है ....लगातार

जाऊँ तो जाऊँ कहाँ ?

(अम्बा लाल सुथार, सम्पादक)

(एक गोमाता और बछड़े की दर्द भरी कहानी)

पिछले अंक से आगे.......

1993 में श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा की स्थापना हुई उसके बाद देशभर में वेदलक्षणा गोमाता की सेवा में क्रांतिकारी बदलाव आये और देश के कोने-कोने में लोग छोटी-मोटी हजारों गोशालाओं की स्थापना कर तन-मन-धन से गोसेवा में लग गये। देश में हजारों की संख्या में छोटे-छोटे गोचिकित्सालय भी संचालित हो रहे हैं। उनके पास भूमि व अन्य मूलभूत सुविधाओं की भारी कमी है, लेकिन फिर भी गोसेवा के उनके बुलन्द हौसलों से वे डटे हुए हैं।

जिस गोशाला में शिवा और उसकी माँ को लेकर गये हैं, यह गाँव के सार्वजनिक शमशान घाट पर स्थित है। कुछ नौजवान इसे चला रहे हैं, बाकी पूरा गाँव इनके विरुद्ध हैं। इस क्षेत्र में लोग 2500 रुपये में बछड़े कसाइयों को बेच देते हैं। यहाँ का कोई भी ग्रामवासी गोशाला के पक्ष में नहीं है। गाँव के गोचर में पर्याप्त भूमि पड़ी है, लेकिन पूरा गाँव इस बात पर एकमत हो गये है कि हमारे गाँव के गोचर में गोशाला नहीं खुलनी चाहिये। इसी गाँव के 3 गोभक्तों ने मिलकर शमशान घाट में गोसेवा आरम्भ कर दी। जिस दिन मुर्दे को जलाया जाता है तब ये गोमाता को कुछ समय के लिये बाहर हांक देते हैं और जब स्थिति सामान्य होती है तब गोमाताओं को वापिस अन्दर ले आते हैं।

कुछ दिन गोमाता का यहाँ उपचार हुआ तो थोड़ी चलने-फिरने लायक हुई। एक दिन गाँव में एक व्यक्ति की मृत्यु हुई तो उसके अंतिम संस्कार के लिये पूरी गोशाला को खाली किया गया। शिवा और उसकी माँ को भी बाहर निकाला गया। शिवा की माँ बहुत मुश्किल से चल रही है। गोशाला की सभी गायें आगे निकल गई और माँ-बेटा धीरे-धीरे चल रहे थे। गाँव के बाहर सड़क पार करके फिर आगे जंगल में जाना था। सड़क पार करने के दौरान एक तेज गति से आए ट्रक ने दोनों को जोरदार टक्कर मार दी। शिवा की रीढ़ की हड्डी में लगी और उछलकर दूर जा गिरा। गोमाता के सीधी पसलियों पर टक्कर लगी, सारा शरीर बिखर गया। गोमाता शिवा को इस हाल में छोड़कर गोलोक चली गई। गोभक्त आए, शिवा को गोशाला लेकर गये। गोमाता को समाधि दी गई। शिवा का उपचार चला, रीढ़ की हड्डी टूटने के कारण अब वो जीवन में कभी खड़ा नहीं हो सकता। गोशाला में असहाय होकर पड़ा-पड़ा शिवा इस प्रकार भगवान को उलाहना दे रहा है-

जिन्दगी देने वाले सुन,
तेरी दुनिया से जी भर गया,
मैं यहाँ जीते जी मर गया...
जिन्दगी देने वाले सुन ...
रात कटती नहीं दिन गुजरता नहीं,
दु:ख ऐसा दिया जो कम होता नहीं...
आँख वीरान है, मन परेशान है
हम कष्टवान हैं
जैसे श्राप कोई दे गया...
जिन्दगी देने वाले सुन
तेरी दुनिया से जी भर गया...
प्रभु तूने मुझसे खुशी छीन ली
जिन्दा रखा मगर जिन्दगी छीन ली....
कर दिया दिल का खून,
चुप कहाँ तक रहूँ,
साफ क्यों न कहूँ,
तू खुशी से मेरी छल कर गया..
जिन्दगी देने वाले सुन,
तेरी दुनिया से जी भर गया,
मैं यहाँ जीते जी मर गया...
जिन्दगी देने वाले सुन ...

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा लोक पुण्यार्थ न्यास के श्री सुरभि संसद का हुआ अधिवेशन

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराजश्री की पावन सन्निधि में एवं पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्ण जी महाराज, कार्यकारी प्रधान संरक्षक श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा न्यास की अध्यक्षता में अभिनव ब्रजमंडल श्री मनोरमा गोलोकतीर्थ नंदगांव अर्बुदारण्य, सिरोही (राज.) में दिनांक 16 जनवरी को श्री सुरभि संसद का एक दिवसीय अधिवेशन सम्पन्न हुआ जिसमें देशभर से न्यास के विभिन्न पदाधिकारियों और आजीवन सदस्यों ने भाग लिया। दिल्ली के गोभक्त श्री राकेश जी बिंदल को राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोनीत किया गया। अधिवेशन में हुई कार्यवाही व सर्वसम्मत तय हुए प्रस्ताव निम्न प्रकार से हैं:-

(1) अधिवेशन का शुभारंभ प्रत्यक्ष गोपूजन, अर्चन एवं आरती से परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराजश्री की पावन सन्निधि में पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्णजी महाराज के कर कमलों से हुआ।

(2) कार्यकारी प्रधान संरक्षक पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्णजी महाराज ने सभापति के रूप में आसन ग्रहण कर कोरम उपस्थित होने की घोषणा कर अधिवेशन की कार्यवाही प्रारम्भ की गई।

(3) गत बैठक की कार्यवाही का पठन गोसेवा महानिर्देशक श्री धनराजजी चौधरी द्वारा किया गया एवं सदन द्वारा इसका सर्वसम्मति से अनुमोदन किया।

(4) न्यास के कार्यकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रघुनाथसिंहजी राजपुरोहित ने स्वागत उद्बोधन प्रदान किया।

(5) केन्द्रीय महामंत्री श्री अर्जुनसिंहजी अंकलेश्वर ने सभी को गोसेवा कार्य में पूर्ण मनोयोग से लगने का आह्वान किया।

(6) केन्द्रीय कोषाध्यक्ष श्री ओमप्रकाशजी गर्ग द्वारा जनवरी 2025 से दिसंबर 2025 की आय 148 करोड़, व्यय 160 करोड़ एवं वर्तमान घास चारा व्यापारियों एवं बैंक ऋण 71.72 करोड़ का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया।

(7) 1 अप्रेल 2026 से 31 मार्च 2027 तक की 214 करोड़ गोसेवा सामग्री की आवश्यकताएं, 16 करोड़ गोसेवार्थ निर्माण एवं प. श्रद्धेय प्रधान संरक्षकजी के भावी गोसेवी संकल्पनाओं के आधार पर विभिन्न विषयों की बजट सहित जानकारी मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (सीईओ) श्री आलोकजी सिंहल द्वारा श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा द्वारा प्रत्यक्ष संचालित गोशालाओं में सेवित 74 हजार के लगभग वेदलक्षणा गोवंश की सेवा के लिए आवश्यक गोसेवा सामग्री का विवरण सभा में प्रस्तुत किया गया। इन गोमाताओं की सेवा में 1 लाख टन सूखे चारे लगभग 8 रु प्रति किलो के औसत भाव से 80 करोड़, 1 लाख 44 हजार टन हरा चारा औसत 3.25 रु प्रतिकिलो भाव से 47 करोड़ रु, पौष्टिक आहार 20 हजार टन औसत भाव 21 रु से 42 करोड़, वर्ष में लगभग 24 करोड़ मानदेय राशि व बीमार गोवंश के लिए लगभग 2 करोड़ औषधि सेवा राशि, डीजल, पेट्रोल, बिजली, पानी में लगभग 3 करोड़ सेवा राशि एवं अन्य गौशाला खर्च में लगभग 15 करोड़ एवं सैंधा नमक लगभग 1 करोड़ कुल लगभग 214 करोड़

रुपए की सेवा सामग्री की आवश्यकता का अगले 1 वर्ष में गोमाता के भोजन प्रसाद एवं अन्य व्यवस्थाओं में रहने का अनुमान प्रस्तुत किया गया। अधिवेशन में चर्चा उपरांत इसको सर्वसम्मति से अनुमोदित किया गया।

आगामी दो वर्षो में प्रत्यक्ष संचालित गोशालाओं में 123 गो आवासों के लिए लगभग 7 करोड़, चारा हॉलों के लिए लगभग 3.25 करोड़, 286 ग्वाला आवासों के लिए लगभग 7.20 करोड़, फेंसिंग के लिए लगभग 3 करोड़, चारा फर्मो व गमानों के लिए लगभग 70 लाख, 3 स्टोरों के लिए लगभग 50 लाख, कार्यालय, राम रसोई के लिए लगभग 70 लाख, धर्मकाटा के लिए 10 लाख, डिग्गी, गोष्ठों की पर्लिग, नंदीशाला निर्माण आदि के लिए लगभग 1 करोड़, भूमि समतलीकरण 600 बीघा के लिए लगभग 1.50 करोड़, 35 ट्यूबवेल के लिए 2.50 करोड़, एक हजार बीघा में ड्रिप सिंचाई लाइन और पोली हाऊस के लिए लगभग 4.50 करोड़ रुपये कुल 32 करोड़ के विकास कार्यो की आवश्यकताओं का अनुमान भी प्रस्तुत किया गया। अधिवेशन में उपस्थित सदस्यों ने चर्चा उपरांत इसको भी सर्वसम्मत पारित किया गया। आगामी वार्षिक बजट एवं प्रस्तुत परियोजनाओं की गतिविधियों को आगे बढाने का निर्णय सर्वसम्मत स्वीकृत हुआ।

(8) श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के संविधान अनुसार वेदलक्षणा गोमाता हम सबके लिये पूज्या, आराध्या, उपास्या एवं सेव्या है। अतः श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा परिवार का सर्वोच्च प्राथमिक दायित्व यह है कि पूज्य भाव से गोमाता की आराधना, उपासना करते हुए विधिवत सेवा करनी है। इसके लिए सर्व प्रथम गोमहिमा का प्रचार-प्रसार करते हुए अपनी गोशालाओं में विराजमान गोवंश को सुखप्रद आवास एवं उच्च गुणवत्तायुक्त आहार प्रदान करना आवश्यक है। उसके बाद गोमाता से प्राप्त पंचगव्यों का मानव के आहार, औषधि तथा उपासना हेतु वैज्ञानिक रूप से संकलन, परिष्करण, अनुसंधान, प्रयोग और विनियोग करना होगा। इसके लिए निम्न समितियों का गठन किया गया।

(अ) गोग्रास संकलन समिति : श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के अनुग्रह निग्रह में सेवित गोवंश के गोग्रास के लिए देशभर में प्रयास करने व गोमहिमा के विभिन्न आयोजन करने हेतु निम्नानुसार गोग्रास संकलन समिति का गठन किया गया।

(आ) श्री गो गोपाल कोरिडोर निर्माण समितिः- श्री गो गोपाल कोरिडोर निर्माण के लिये इस समिति का गठन किया गया है। इस कोरिडोर में मुख्य रूप से श्री गोपाल गोवर्धननाथ जी भगवान का मुख्य मंदिर, वेदलक्षणा गोमाताओं के 108 निवास मन्दिर एवं गोरक्षकों, गोभक्तों तथा गोउपासकों के 108 स्मृति मंदिर होंगे जिनका ग्रेनाइट शिलाओं से चार वर्ष में निर्माण पूर्ण करने का लक्ष्य है। श्री गोपाल गोवर्धननाथजी भगवान का मंदिर 131 फुट चोड़ा तथा 241 फुट लम्बा और 108 फुट ऊंचाई का ग्रेनाइट व मार्बल की दो लाख घनफुट शिलाओं से चार वर्ष में तैयार होने का अनुमान है। श्री मीरा गोपाल कुंज, सनातन संस्कार भवन, धर्म ग्रन्थालय, भोजनालय, संत निवास, भक्त निवास, सेवायतन निवास, आवश्यक वस्तु संग्रहालय, सप्तऋषि कुटीर, पूजा पुष्करणी आदि निर्माण कार्य भी इस समिति की देखरेख में होना हैं।

(इ) सुरभि विश्वविद्यालय स्थापना समितिः- सुरभि विश्वविद्यालय के अंतर्गत वेदलक्षणा पंचगव्यावैंद अनुसंधानशाला, सुरभि पंचगव्यावैंद महाविद्यालय, गोचिकित्सा महाविद्यालय, गोकृषि महाविद्यालय सहित सुरभि विश्वविद्यालय के अन्य संसाधनों की आवश्यकता का अनुमान है। इनकी स्थापना के लिए इस समिति का गठन किया गया है

(ई) वेदलक्षणा पंचगव्यावैंद अनुसंधान समितिः-

सुरभि आरोग्यकुलम में एक सौ बेड के चिकित्सालय का संचालन करते हुए विभिन्न प्रकार के रोगों पर भिन्न-भिन्न प्रजातियों, रंगों, आयु-वर्ग की वेदलक्षणा गोमाताओं से प्राप्त पंचगव्यों का आयुर्वेदिक औषधियों के साथ योग एवं प्रयोग करना। उपरोक्त कार्य के लिए आरोग्य कुटिरों, रसायनशाला और प्रयोगशाला का निर्माण करना। अलग-अलग प्रजाति की गोमाताओं के अलग-अलग गोष्ठ बनाने तथा चार सौ प्रजातियों की आयुर्वेदिक औषधियाँ के पेड़-पौधे लगाने का लक्ष्य है। इसके लिये इस समिति का गठन किया गया है।

(उ) वेदलक्षणा गोसंवर्धन समिति:- भारत की 108 वेदलक्षणा गो प्रजातियों का संरक्षण और संवर्धन करने के लिए आवश्यक आधारभूत ढांचा तैयार करना है इसके लिए सर्वप्रथम श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा की गोशालाओं में विद्यमान गोवंश से प्राप्त गोमय के कण-कण का संकलन, परिष्करण कर विक्रय करना। अभिनव व्रजमण्डल अर्बुदारण्य राजस्थान, उत्तराखण्ड, उड़ीसा, मालवा और कर्नाटक में उक्त व्यवस्था की जायेगी। इस कार्य में दस वर्ष समयावधि रखी गई हैं। इसमें आवश्यकता अनुसार निवेश किया जायेगा। सांचोरी, थारपारकर, राठी, साहिवाल, कांकरेज, नायरी, रेड्डी, गिर, कासरगोड़ तथा पुंगन्नुरु गो प्रजातियों का संवर्द्धन करने के लिए अभिनव व्रजमण्डल में पांच हजार गायों के गोष्ठ, आवास, घास-चारा एवं पोष्टीक आहार संग्रहालय, दुग्ध संकलन परिष्करण केन्द्र, गोमूत्र रिफाइनरी, गोमय प्लान्ट, गोसेवक निवास, गोचिकित्सालय आदि बनाने है इसमें लगभग तीन वर्ष का समय लगने की सम्भावना है। इसकी देखरेख के लिये इस समिति का गठन किया गया है।

(ऊ) श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के रचनात्मक कार्य को और गति प्रदान करने के लिए देशभर के प्रान्तों तथा महानगरों की समितियां का भी गठन किया गया।

(ए) श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के व्यावसायिक प्रकल्प वेदिक गोउत्पाद फाऊंडेशन के निदेशक मंडल का पुनर्गठन:- इसका प्रस्ताव सर्वसहमति से पारित हुआ। निदेशकों की नई नियुक्ति हेतु कार्यकारी प्रधान संरक्षकजी से निवेदन किया गया।

(9) न्यास की केंद्रीय कार्यकारिणी के दो वर्ष के कार्यकाल पूर्ण होने पर नवीन केन्द्रीय कार्यकारिणी में राष्ट्रीय अध्यक्ष पद हेतु प्रधान संरक्षकजी द्वारा दिल्ली के गोभक्त लाला श्री हरिरामजी बिंदल के सुपुत्र श्री राकेशजी बिंदल को मनोनीत किया गया। आपका परिवार प्रारंभकाल से ही श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा रचनात्मक गोसेवा महाभियान से तथा गोसेवा से जुड़ा रहा हैं। कार्यकारी प्रधान संरक्षक, उपस्थित संतों, पदाधिकारियों एवं आजीवन सदस्यों ने करतल ध्वनि के साथ इस प्रस्ताव का सर्वसम्मति से अनुमोदन किया गया।

(10) सभापति महोदय ने गोग्रास संकलन में युवा वर्ग की भागीदारी को और अधिक बढ़ाने के लिए युवा समूह बनाकर प्राप्त सुझावों के आधार पर योजना बनाकर गोग्रास संकलन के कार्य को गति देने की आवश्यकता जतायी। सर्वसम्मति से इस हेतु गोवत्स युवा सेवा संघ के गठन की स्वीकृति प्रदान की।

(11) गोसेवा के इस निरन्तर बढ़ रहे महाअभियान में मातृशक्ति की महत्वपूर्ण भूमिका को दृष्टिगत रखते हुए संसद में सर्वसम्मति से गोभक्ता महिला सेवा मंडल की स्थापना का प्रस्ताव भी सर्वसम्मति से पारित हुआ।

(12) श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा न्यास में आयोजित होने वाली सुरभि संसद अधिवेशन, सुरभि प्रज्ञा परिषद बैठक, केंद्रीय कार्यकारिणी बैठक एवं न्यासी बोर्ड बैठक में सहभागियों से शुल्क निर्धारित करने की आवश्यकता को समझते हुए अगली बैठक से पूर्व इसका निर्धारण करना तय किया गया।

(13) श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के आय-व्यय की जानकारियाँ और बकाया संकल्पों की सूचियाँ व्यवस्थित रूप से एक ऐप के माध्यम से समस्त कार्यकारिणी सदस्यों को नियमित साझा करने पर भी आम सहमति बनी। इस कार्य के लिए श्री घेवरजी पुरोहित (सी.ए.) एवं श्री अखिलेशजी पटेल को जिम्मेदारी प्रदान की गयी।

(14) दिल्ली एनसीआर में आगामी समय में एक विशाल 1008 कुण्डीय यज्ञ का आयोजन कर संपूर्ण दिल्ली वासियों सहित देश भर में गोचेतना का संचार करने की भी सर्व सहमति बनी।

(15) संस्था के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी पद के लिये सवैतनिक नियुक्ति करने की आवश्यकता को समझ कर, वैदिक गो उत्पाद फाउंडेशन के लिए महाप्रबंधक एवं सुरभि आरोग्यकुलम के व्यवस्थित कार्य को जारी रखने के लिए प्रबंधक की नियुक्ति करने पर भी सर्व सहमति बनी।

(16) आगामी 29 जुलाई 2026, आषाढ पूर्णिमा से प्रारम्भ होने वाले चातुर्मास मंगल महोत्सव के लिए श्री शारदापीठ द्वारिका के अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री सदानंद सरस्वतीजी महाराज से प्रारंभिक सहमति प्राप्त हुई है। होली के पश्चात् विधिवत सहमति प्राप्त होने पर चातुर्मास की दिव्य तैयारियां प्रारम्भ करने पर भी सर्व सहमति बनी।

(17) श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा लोक पुण्यार्थ न्यास के प्रचार एवं संपर्क कार्यालय दिल्ली की महत्ता को देखते हुए उसे और अधिक सुदृढ़ करने पर सर्व सहमति बनी।

सभा में पूज्य महंत श्री रविन्द्रानंद सरस्वती जी महाराज, पूज्य संत श्री गोविंदवल्लभदासजी महाराज, पूज्य संत श्री मंगलपुरीजी महाराज एवं गोकथाकार श्री धनेश्वरभाई का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। न्यास के नवमनोनीत केन्द्रीय अध्यक्ष श्री राकेशजी बिन्दल ने अपने संबोधन में संतों के आशीर्वाद व सभी के सहयोग से तन-मन-धन से गोसेवा में लगने का भाव व्यक्त किया।

अधिवेशन में श्री राव मोहनसिंहजी चितलवाना, श्री डुंगरारामजी पुरोहित बिछावाड़ी, श्री अम्बा लाल जी सुथार कारोला, श्री ब्रह्मदत्तजी पुरोहित नानरवाड़ा, श्री प्रतापजी राजगुर जैतपुरा, श्री जसराजजी राजपुरोहित वाली, श्री मोहनभाई लाखणी, श्री मांगीलालजी पारीक दिल्ली, श्री सुखरामजी विश्नोई सांचौर, श्री नरेन्द्रजी पुरोहित धानोल मुंबई, श्री मंगनीभाई रावल मसाली, श्री स्वतंत्रकुमारजी शर्मा जम्मू, श्री भूरारामजी पुरोहित आबूरोड, श्री भागचंदजी जांगिड़ किशनगढ़, श्री रमाकांतजी बेरीवाल कोलकाता, श्री यशपालजी गुप्ता दिल्ली, डॉ. उदारामजी वैष्णव साँचोर, श्री डूंगरसिंहजी राजपुरोहित लुधियाना, श्री आनंदजी जालान दिल्ली, श्री सुरेन्द्रसिंहजी बिष्ट मुम्बई, श्री अजयजी शर्मा सूरत, श्री अमृतजी पुरोहित धुडवा, श्री घेवरजी पुरोहित बिलड़ सहित उपस्थित सदस्यों ने अपने बहुमूल्य सुझाव प्रस्तुत किये।

सभापति महोदय पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्णजी महाराजजी ने कहा कि ठाकुरजी ने प्रेम के कारण हमें गोसेवा में नियुक्त किया है, इसलिये अपने अपने कार्यो की स्वयं समीक्षा करते हुए अधिक से अधिक सेवा करके प्रेम के बदले प्रभु को प्रसन्नता देनी चाहिये।

परम् श्रद्धेय प्रधान संरक्षक गोऋषिजी महाराजश्री ने अपने आशीर्वाद में देशभर से आए सैकड़ों प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए कहा कि आगामी एक दशक तक यदि समर्पित भाव से गोमाता की सेवा की जाए तो भविष्य में गोमाता के लिए कुछ भी आवश्यकता नहीं पड़ेगी। गोमाता धरती का पोषण, पर्यावरण का परिशोधन तथा सनातन संस्कृति का सिंचन करती है। गोमाता के जयकारों के साथ अधिवेशन अपनी पूर्णता को प्राप्त हुआ।

वैदिक गोकृषि विज्ञान पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का हुआ भव्य आयोजन

अभिनव ब्रज मण्डल, श्री मनोरमा गोलोक नंदगांव में वैदिक गोकृषि विज्ञान पर दिनांक 23 जनवरी से 25 जनवरी तक तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानन्दजी महाराजश्री के पावन सानिध्य में भव्य आयोजन हुआ। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि पद्मश्री श्री कवलसिंह जी चौहान (प्रगतिशील किसान)रहे। विशिष्ट अतिथियों में श्री ऋतुराज जी शर्मा (जेठा फार्म के संस्थापक), ब्रिगेडियर डॉ. राजाराम जी यादव तथा लोक भारती के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री श्री गोपाल जी उपाध्याय रहे। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता श्री गोधाम महातीर्थ के सीईओ आलोक सिंहल ने की।

देशभर से आए विद्वानों वैज्ञानिकों, गोपालक विशेषज्ञों एवं शोधकर्ताओं ने इस संगोष्ठी में भाग लिया। संगोष्ठी का उद्देश्य वैदिक परंपराओं पर आधारित गोकृषि, प्राकृतिक खेती, गोसंवर्धन एवं सतत वैदिक कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देना है।

उद्घाटन सत्र में अध्यक्षता कर रहे सीईओ श्री आलोक जी सिंहल ने श्रद्धेय महाराज के भावानुरूप भारतीय कृषि परंपरा में गोमाता के महत्व और आधुनिक संदर्भ में वैदिक गोकृषि विज्ञान की प्रासंगिकता पर विस्तार से प्रकाश डाला। पहले दिन गोर्गेनिक खाद एवं गोआधारित उर्वरकों पर गहन चर्चा हुई।

मुख्य अतिथि पद्मश्री श्री कवल सिंह चौहान ने कहा कि गोआधारित खेती, प्राकृतिक खेती, रसायनमुक्त और स्वास्थ्यवर्धक कृषि ही देश का भविष्य है। भारत के पास खेती के सर्वोत्तम संसाधन हैं, लेकिन नैतिक शिक्षा और जीवन मूल्यों की कमी के कारण हम पिछड़ रहे हैं। यदि वैदिक मूल्यों के साथ प्राकृतिक गोकृषि को अपनाया जाए तो भारत फिर से विश्वगुरु बन सकता है। संगोष्ठी में स्वामी मंगलपूरीजी महाराज ने कहा कि गोसेवा और प्राकृतिक गोकृषि भारतीय संस्कृति की आत्मा है। वैदिक गोकृषि से ही मानव, पर्यावरण और प्रकृति का संतुलन संभव है।

जेठा फार्म के संस्थापक एवं कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्री ऋतुराज जी शर्मा ने कहा कि प्राकृतिक खेती से मिट्टी की उर्वरता और किसानों की आय दोनों बढ़ती हैं। गोआधारित मॉडल से रसायनमुक्त, टिकाऊ और लाभकारी कृषि संभव है। विशिष्ट अतिथि ब्रिगेडियर डॉ. राजारामजी यादव ने कहा कि वैदिक गोकृषि विज्ञान केवल परंपरा नहीं, बल्कि आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टि से भी पूर्णतः प्रमाणित है। इससे स्वास्थ्य, पर्यावरण और अर्थव्यवस्था तीनों को लाभ मिलता है।

गोपाल उपाध्याय (लोक भारती राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री) ने कहा कि गौकृषि भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। इसे राष्ट्रीय आंदोलन के रूप में आगे बढ़ाने की आवश्यकता है।

संगोष्ठी के दौरान विभिन्न तकनीकी सत्र, शोध पत्र प्रस्तुतियाँ एवं संवाद कार्यक्रम आयोजित किए गये जिनमें गोसंवर्धन, प्राकृतिक खेती, जैविक उर्वरक, बीज संरक्षण और ग्रामीण विकास जैसे विषयों पर मंथन हुआ। देशभर से आए किसानों, वैज्ञानिकों, गोपालन विशेषज्ञों एवं शोधकर्ताओं ने वैदिक मूल्यों पर आधारित प्राकृतिक और गोआधारित खेती को आत्मनिर्भर भारत की मजबूत नींव बताया एवं कहा कि गाय, खेत और वेदों का संगम है। गोमय वातावरण में संपन्न हुई तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी, आत्मनिर्भर भारत के लिए वैदिक गोकृषि का संकल्प है। समापन समारोह की अध्यक्षता कार्यकारी अध्यक्ष श्री रघुनाथ सिंह शिवतलाव ने की। मुख्य अतिथि पद्मश्री श्री कवल सिंह चौहान

तथा विशिष्ट अतिथि मैनेजिंग ट्रस्टी श्री ब्रह्मदत्त जी पुरोहित और सीईओ आलोक सिंहल रहे।

कार्यकारी अध्यक्ष श्रीरघुनाथ सिंहजी शिवतलाव ने कहा कि महाराजश्री के मार्गदर्शन में यह संगोष्ठी वैदिक गोकृषि के प्रचार-प्रसार का प्रेरक केंद्र बनी है। मुख्य अतिथि पद्मश्री श्री हुकमचंद जी पाटीदार ने पथमेड़ा के अनुभव साझा करते हुए कहा कि गोआधारित प्राकृतिक खेती से किसान आर्थिक, सामाजिक और आत्मिक रूप से समृद्ध बन सकता है। विशिष्ट अतिथि श्री ब्रह्मदत्त पुरोहित ने कहा कि गोसंवर्धन और सतत कृषि से ही ग्रामीण अर्थव्यवस्था सशक्त होगी, जबकि सीईओ श्री आलोक जी सिंहल ने आधुनिक प्रबंधन के साथ वैदिक कृषि को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता पर बल दिया।

संगोष्ठी में प्रमुख अतिथि डॉ. ब्रिगेडियर राजाराम जी यादव ने कहा कि गोपालन, गोसंवर्धन और नस्ल सुधार के वैज्ञानिक तरीकों को यदि वैदिक ज्ञान से जोड़ा जाए तो देश में दुग्ध उत्पादन के साथ-साथ जैविक खेती को नई ऊंचाई मिल सकती है। विशेष अतिथि बुलंदशहर (उत्तरप्रदेश) के श्री संजीव कुमार, जिन्हें 'इंजीनियर किसान' के नाम से जाना जाता है, ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती पद्धति से लागत घटती है और लाभ बढ़ता है। उन्होंने मानव चालित कृषि यंत्रों एवं प्राकृतिक गुड़ उत्पादन की तकनीकों की जानकारी भी दी। गुजरात के जूनागढ़ से आए विशेष अतिथि श्री अरविंद बल्लभभाई मारवानिया ने कहा कि उनके पिता पद्मश्री वल्लभभाई द्वारा विकसित गाजर की किस्म को उन्नत बनाकर उन्होंने प्राकृतिक तरीके से सफल खेती का उदाहरण प्रस्तुत किया है, जो देश के किसानों के लिए प्रेरणा है।

संगोष्ठी में श्री कानसिंहजी निर्वाण, श्री अरविंद मारवाणिया, श्री संजीव कुमार (उप्र), श्री संजय सुरोलिया, श्री रघुवीर चौधरी, श्री उपेंद्र पटेल, श्री ब्रजभूषण सहित अनेक गणमान्य अतिथियों ने सहभागिता की। वक्ताओं ने "एक परिवार, एक एकड़ भूमि और एक गाय" के सिद्धांत को आत्मनिर्भर किसान का आधार बताते हुए गोआधारित कृषि को देश का भविष्य कहा। देशभर से आए उन्नत एवं नवाचारी किसानों को सम्मानित भी किया गया।

सभी वक्ताओं ने एक स्वर में कहा कि यदि वैदिक मूल्यों के साथ प्राकृतिक व गोआधारित खेती को अपनाया जाए तो भारत न केवल खाद्य सुरक्षा में आत्मनिर्भर बनेगा, बल्कि पुनः विश्व को सतत और नैतिक कृषि का मार्ग भी दिखा सकेगा। तीन दिनों तक चली इस राष्ट्रीय संगोष्ठी को वैदिक गोकृषि विज्ञान के प्रचार-प्रसार की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल बताया गया, जिससे गोआधारित प्राकृतिक खेती को नई सोच, नई ऊर्जा और नई गति मिलने की उम्मीद जताई गई।

परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानन्द जी महाराजश्री ने देश भर से पधारे हुए गोकृषि वैज्ञानिकों और किसानों को अपने आशीर्वचन में कहा कि गोमाता भारतीय संस्कृति की धुरी है और वैदिक गोकृषि ही मानव, प्रकृति व पर्यावरण के संतुलन का सशक्त माध्यम है। आज की जहरीली एवं रासायनिक खेती से मानव चारों तरफ से घिर चुका है और उसे गोकृषि पर लौटकर आना ही होगा। आज निराश्रित गोमाता को सेवा की आवश्यकता है, लेकिन इसकी उपेक्षा करके देश की सरकारें और अधिकतर हिन्दू जन मानस ने निराश्रित गोवंश को भूखे-प्यासे मरने के लिये छोड़ दिया है और देशभर के हजारों कत्लखानों में कटने दिया जा रहा है। एक समय ऐसा आयेगा जब मानव अपने प्राणों की रक्षा के लिये गो की शरण में आयेगा लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी होगी। देश में बहुत कम संख्या में वेदलक्षणा गोवंश बचेगा। इसलिये आप सभी से अपेक्षा है कि अपना पूरा सामर्थ्य गोसेवा में लगा दें।

कर्नाटक राज्य के पूर्व उप मुख्यमंत्री ने पथमेड़ा और अभिनव ब्रजमण्डल में किये गोदर्शन

कर्नाटक राज्य के पूर्व उप मुख्यमंत्री श्री के ईश्वरप्पा दिनांक 20 जनवरी को परिवार सहित वहाँ के स्थानीय एवं प्रवासी गोभक्तों के साथ पधारे और श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा द्वारा संचालित अभिनव ब्रजमंडल मनोरमा गोलोक अर्बुदारण्य एवं श्री गोधाम महातीर्थ आनन्दवन पथमेड़ा परिसर के दर्शन कर किये। वे वहाँ के गोभक्तों को साथ लेकर आये ताकि वे यहाँ की गोसेवा को देखकर अपने राज्य में आदर्श गोसेवा आरम्भ कर सके।

श्री गोधाम पथमेड़ा में पूज्य महंत गोशरण श्री नंदरामदासजी महाराज और प्रबंधक श्री श्रवण जी शर्मा ने उनको गोदर्शन व गोपूजन करवाया।

परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराजश्री ने कर्नाटक को भक्ति की भूमि बताते हुए वहाँ से गोसेवा के कार्य को आदर्श स्वरूप देकर संपूर्ण दक्षिण भारत में गोसेवा को विस्तार देने की आवश्यकता बताते हुए उन्हें गोसेवा कार्य में आगे बढ़ने का गोमाता एवं गोवर्धननाथजी का आशीर्वाद प्रदान किया।

श्री गोधाम के सीईओ श्री आलोक जी सिंहल ने उन्हें परिसर परिभ्रमण करवाते हुए गोर्गेनिक खेती विशेष कर गोमाता के लिए नेपियर उत्पादन की जानकारी प्रदान की। यहाँ की प्राकृतिक खेती को देखकर माननीय पूर्व उप मुख्यमंत्री जी बहुत प्रसन्न हुए। पूज्य महंत श्री अरूपानन्दजी सरस्वती महाराज, पूज्य संत श्री सीतारामदासजी महाराज, पूज्य सन्त श्री मगनपुरीजी महाराज ने उनसे गोपूजन करवाया व गोमाता का स्मृति चिह्न प्रदान किया। धन्वंतरी विभाग में गोसेवा कार्यो को देख करके वे अभिभूत हो गये। बिहारीलालजी राजपुरोहित बसंत, कैलाशजी सांथु व हीरसिंहजी राठौड ने उन्हें धन्वंतरि में व्यवस्थाओं की जानकारी दी।

मकर संक्रांति पर्व पर न्यास द्वारा संचालित गोशालाओं के गोवंश को दिया गया मीठा भण्डारा

नंदगांव। मनोरमा गोलोकतीर्थ नंदगांव में मकर संक्रांति का पावन पर्व गोसेवा के साथ भव्य रूप से मनाया गया। इसको लेकर संस्थान ने पथमेड़ा से संबंधित देशभर की सभी गोशालाओ में कई कार्यक्रम आयोजित किये। मकर संक्रांति को दान और पुण्य का महान पर्व माना जाता है और इस अवसर पर गोमाता की सेवा को सर्वोत्तम सेवा बताते हुए श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के प्रधान संरक्षक परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानन्दजी महाराजश्री ने कहा कि सर्दी के मौसम में गोमाता के गोग्रास में मीठे भंडारे की आपूर्ति करना अत्यंत पुण्यदायी है। इससे न केवल गोमाता का पोषण होता है बल्कि सेवा करने वाले को भी विशेष पुण्य की प्राप्ति होती है।

स्वामीश्री ने उपस्थित गोभक्तों को संबोधित करते हुए कहा कि मकर संक्रांति का पर्व त्याग, दान और करूणा का संदेश देता है। इस दिन यदि निराश्रित, दुर्घटनाग्रस्त, गंभीर बीमार, विकलांग, वृद्ध एवं दुर्बल गोवंश की सेवा की जाए तो यह मानव जीवन का सबसे बड़ा धर्म और सौभाग्य है। उन्होंने बताया कि श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा द्वारा संचालित देशभर की 65 से अधिक गोशालाओं में वर्तमान में लगभग 1 लाख 56 हजार से अधिक गोवंश की सेवा की जा रही है, जिनमें बड़ी संख्या में निराश्रित एवं पीड़ित गोमाताएं शामिल हैं।

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा की प्रत्यक्ष संचालित गोशालाओं में सेवित गोमाताओं को मकर संक्रांति को एक दिन का मीठा भण्डारा गोभक्त श्री देवारामजी जागरवाल कैलाशनगर वालों की तरफ से करवाया गया।

अभिनव ब्रजमण्डल श्री मनोरमा गोलोक अर्बुदारण्य नन्दगांव में राजपुरोहित अधिवक्ता, न्यायाधीश, न्यायिक कर्मचारी महाधिवेशन सम्पन्न।

अभिनव ब्रजमंडल मनोरमा गोलोक अर्बुदारण्य नन्दगांव (केसुआ) की पावन व ऐतिहासिक धरती पर 30 दिसम्बर 2025 से 1 जनवरी 2026 तक अखिल भारतीय राजपुरोहित अधिवक्ता, न्यायाधीश एवं न्यायिक कर्मचारी अधिवेशन राजस्थान शाखा के तत्वावधान में सम्पन्न हुआ। इसमें न्यायाधीशों समेत सैकड़ों अधिवक्ताओं ने भाग लिया। न्यायायिक महाधिवेशन का शुभारम्भ अधिवेशन के मुख्य अतिथि न्यायाधीश श्री मुकेशजी राजपुरोहित राजस्थान उच्च न्यायालय जयपुर, पूज्य संत दंडी स्वामी श्री देवानंदजी महाराजजी द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया। उद्घाटन सत्र में वर्तमान समय में अत्यन्त जटिल स्थिति पैदा कर रही साइबर अपराध, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ड्रग्स का उपयोग-दुरुपयोग, उससे उत्पन्न कानूनी चुनौतियां तथा उनके समाधान पर विस्तृत चर्चा की गयी।

श्री मुकेशजी राजपुरोहित न्यायाधीश राजस्थान उच्च न्यायालय ने अपने उद्बोधन में कहा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता न्यायिक प्रक्रिया को सरल, त्वरित एवं पारदर्शी बनाने में सहायक सिद्ध हो सकती है, किन्तु इसके दुरुपयोग से न्याय प्रणाली, गोपनीयता एवं नैतिक मूल्यों पर प्रतिकूल प्रभाव भी पड़ सकता है। अत: कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग हेतु स्पष्ट नियम, नैतिक दिशा-निर्देश एवं विधिक नियंत्रण आवश्यक है। पूज्य संत श्री देवानंदजी महाराजजी के सान्निध्य में देश-धर्म व सनातन समाज के लिये भी मार्गदर्शन दिया गया। समापन समारोह में पूज्य संत स्वामी श्री सत्यानन्दजी महाराज का सान्निध्य प्राप्त हुआ। श्री नरेन्द्रजी राजपुरोहित एएजी के मुख्य आतिथ्य में आयोजन संपादित हुआ।

इस अवसर पर श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा लोक पुण्यार्थ न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री रघुनाथसिंहजी राजपुरोहित, राष्ट्रीय महामंत्री श्री अर्जुनसिंहजी राजपुरोहित अंकलेश्वर, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (सीईओ) श्री आलोकजी सिंहल, नन्दगांव के मैनेजिंग ट्रस्टी श्री ब्रह्मदत्तजी राजपुरोहित, गोसेवक एवं भामाशाह श्री नरेंद्रजी राजपुरोहित धानोल, श्री छोगालालजी राजपुरोहित कैलाशनगर, श्री सुशीलजी राजपुरोहित नीतोड़ा, श्री महेंद्रजी राजपुरोहित पिंडवाड़ा का विशेष योगदान रहा। श्री सुरेशजी राजपुरोहित, श्री अशोकजी राजपुरोहित, श्री सुनीलजी राजपुरोहित, श्री धर्मेन्द्रजी राजपुरोहित, श्री अशोकजी राजपुरोहित, श्री ईश्वरजी राजपुरोहित, श्री मनोजजी राजपुरोहित, श्री भूपेन्द्रजी राजपुरोहित, श्री कृष्णजी राजपुरोहित, श्री रोहितजी राजपुरोहित, श्री सचिनजी राजपुरोहित, श्री अभिषेकजी राजपुरोहित, श्री नरेशजी राजपुरोहित, श्री महेन्द्रजी राजपुरोहित, श्री मनीषजी राजपुरोहित, श्री सुरेखाजी राजपुरोहित, श्री भूमिकाजी राजपुरोहित, श्री अरुणाजी राजपुरोहित आदि की सहभागिता रही।

छत्तीसगढ़ राज्य गोसेवा आयोग अध्यक्ष ने किया श्री कामधेनु गो अभयारण्य का अवलोकन

माननीय श्री विशेषर सिंह पटेल जी, अध्यक्ष छत्तीसगढ़ राज्य गोसेवा आयोग दिनांक 20 जनवरी को श्री कामधेनु गो अभ्यारण्य सालरिया, सुसनेर म.प्र.पधारे तथा यहाँ उन्होंने गोमाता का पूजन कर पूज्य महंत श्री रविन्द्रानन्द सरस्वती जी महाराज से आशीर्वाद लिया और पूज्य महंत जी ने इन्हें गोमाता का स्मृति चिन्ह भेंट किया। पटेल जी यहाँ के गो चिकित्सालय के दर्शन कर अभिभूत हो गये और कहा कि यहाँ अपने माता-पिता की भांति पूज्य भाव से गोमाताकी सेवा की जा रही है।

गोमूत्र के बिना आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति अधूरी है

(संकलित)

जिस प्रकार समाज और घरों से गो दूर हुई, वैसे ही आधुनिक आयुर्वेदाचार्य पंचगव्यों से दूर होते गए। आज के वैद्य विभिन्न कम्पनियों द्वारा बाजार में प्रस्तुत औषधियों पर निर्भर हो गये। इन कम्पनियों द्वारा अपनी औषधियों में गोमूत्र डाला ही नहीं जाता है और डाला भी जाय तो उनको सत्य पता ही नहीं है कि गाय किसे कहते हैं और गोमूत्र किस प्राणी से प्राप्त होता है? यहाँ ध्यान देने योग्य बात है कि केवल भारतीय नस्लों की वेदलक्षणा गोमाता के मूत्र को ही गोमूत्र कहते हैं। आजकल तो जर्सी और अन्य पशुओं को भी गाय समझने लगे और उन पशुओं के मूत्र को गोमूत्र समझ बैठे। गोमूत्र आयुर्वेद का आधार है, इसके बिना तो पूरा आयुर्वेद ही अधूरा है। गोमूत्र से दूर होकर आधुनिक आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति ने पंचगव्य चिकित्सा को ही त्याग दिया।

आयुर्वेद के अनुसार मानव शरीर पंचमहाभूतों- पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि व वायु तथा तीन दोषों- वात, पित्त और कफ के संतुलन पर आधारित है। मानव शरीर केवल भौतिक तत्वों का समूह नहीं है, बल्कि उसके चारों और एक मुख्य जैव ऊर्जा क्षेत्र भी विद्यमान माना गया है जिसको औरा कहा गया है। विभिन अध्ययनों में यह संकेत मिलता है कि मनुष्य के विचार और तनाव शरीर की ऊर्जा गति को प्रभावित करते हैं। जब यह ऊर्जा क्षेत्र असंतुलित होता है तब शारीरिक व मानसिक रोग होते हैं। आयुर्वेद में गोमूत्र को एक जैव सक्रिय पदार्थ माना गया है जो शारीरिक व मानसिक दोषों एवं ऊर्जा के संतुलन में सहायक होता है। इसलिए गोमूत्र को समग्र चिकित्सा कहा जाता है।

गोमूत्र कफ और वात से उत्पन्न दोषों को नष्ट करने का सबसे प्रभावी प्राकृतिक साधन माना गया है। इसके बिना पाचन की अग्नि बढ़ाने और बुद्धि बढ़ाने जैसे उपचार प्रभावी नहीं होते हैं। गोमूत्र एक ऐसा तत्व है जो मुर्झाए हुए जीवन को पुनः खिला सकता है। भारत के ऋषियों ने हजारों वर्ष पहले गोमूत्र को अमृत कहा था, आज हम उससे वंचित हो गये। सचमुच में गोमूत्र रहस्यों से भरा हुआ है। भारतीय वेदलक्षणा गाय की पीठ पर एक सूर्यकेतु नाम की नाड़ी होती है जो सूर्य की किरण को ग्रहण करती है उससे गोमाता के शरीर में स्वर्णक्षार का निर्माण होता है। यह स्वर्णक्षार गोमूत्रको अमृत बना देता है।

गोमूत्र में सभी रोगों को ठीक करने की अद्‌भुत क्षमता होती है। यह औषधियों के अवशोषण को बढ़ाता है। वेज्ञानिक शोध के अनुसार गोमूत्र अन्य दवाइयों जैसे एंटीबायोटिक्स और कैंसर रोधी दवाइयों के प्रभाव को कई गुणा बढ़ा देता है। गोमूत्र उत्प्रेरक का कार्य करता है और उपचार के प्रभाव को बढ़ा देता है। शोधों में पाया गया है कि गोमूत्र में यूरिक एसिड, कॉपर, पोटेशियम, सभी प्रकार के विटामिन एवं स्वर्ण कणों के रूप में पाए जाते हैं। यह कैंसर कोशिकाओं की वृद्धि को नियंत्रित करता है साथ में उसको कम करने का प्रयास भी करता है। गोमूत्र में विष को शमन करने की अद्‌भुत क्षमता होती है। गोमूत्र विषेली औषधियों को शुद्ध करके उनका अमृतीकरण कर देता है। गोमूत्र शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है एवं क्षारीय होने के कारण शरीर में बढ़ी हुई अम्लता को कम करता है। गोमूत्र चर्म रोगों में भी वरदान साबित हुआ है। इन सभी गुणों के कारण गोमूत्र को धरती का अमृत कहा गया है।

हिन्दी मासिक पत्रिका ''कामधेनु कल्याण'' स्वामी ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला पथमेड़ा'' के लिए प्रकाशक एवं सम्पादक अम्बा लाल सुथार, मुद्रक पुरखाराम पुरोहित चारभुजा प्रिंटिंग प्रेस, गोमाता सर्किल, हाडेचा रोड़ साँचौर से मुद्रित करवाकर ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला'' पथमेड़ा, तहसील-सांचौर, जिला-जालोर (राजस्थान) 343041 से प्रकाशित।

वेदलक्षणा गोमूत्र अर्क

(डॉ. श्याम सिंह राजपुरोहित, आयुर्वेदाचार्य)

गोमूत्र और अर्क में अन्तर– गोमूत्र को एक विशेष प्रकार के बर्तन में गर्म करके उसकी भाप को एक अलग बर्तन में ठण्डा करने से गोमूत्र अर्क बनता है। ताजे गोमूत्र में अमोनिया की तेज गंध होती है जो कई लोग इस गंध के कारण गोमूत्र ले नहीं पाते हैं, अर्क में यह गंध कम हो जाती है। गोमूत्र को अधिक दिनों तक सुरक्षित नहीं रखा जा सकता है जबकि अर्क को लम्बे समय तक रखा जा सकता है। गोमूत्र अर्क गोमूत्र का एकदम शुद्धतम रूप है। गोमूत्र अर्क बनाने के लिये हमेशा छोटी बछड़ियों, जो पूर्ण स्वस्थ हो, गर्भवती नहीं हो व 3 वर्ष से छोटी हो, घूम फिर करके चारा चरने वाली हो तथा देसी नस्ल की हो उसी का गोमूत्र काम में लेना चाहिए।

वेदलक्षणा गोमूत्र अर्क सर्वश्रेठ क्यों है– श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा की गोशालाओं में गोमातएं प्राकृतिक रूप से चरती और विचरती है तथा स्वस्थ और तंदुरूस्त रहती है एवं 100 प्रतिशत भारतीय देसी नस्ल की वेदलक्षणा गोमाताएं ही यहाँ सेवित है। साथ ही वेदलक्षणा गोमूत्र अर्क में संत महात्माओं के आशीर्वाद का प्रसाद भी समाहित है। यहाँ पर संवर्धित बछड़िओं के गोमूत्र का उपयोग अर्क बनाने में किया जाता है। इन बछड़ियों को जैविक चारा खिलाया जाता है उसमें वन औषधियों को भी दिया जाता है। यहाँ बछड़ियों को माँ का पर्याप्त मात्रा में दूध भी पिलाया जाता है जिससे बछड़ियों स्वस्थ और हष्ट पुष्ट होने के कारण वेदलक्षणा गोमूत्र अर्क बहुत ही गुणकारी, औषधीय उपयोगी व अन्यों से श्रेठ है।

गोमूत्र अर्क का औषधीय उपयोग– गोमूत्र क्षार होने के कारण शरीर की अम्लता को कम करता है। क्षार होने के कारण शरीर की अतिरिक्त चर्बी को कम करता है जिससे मोटापा भी घटता है, बढ़ी हुई बी.पी. को कम करने में बहुत लाभदायक है और शरीर में बढ़े हुए कोलेस्ट्रॉल को कम करता है। डायबिटीज के रोगियों में पेनक्रियाज की बीटा सेल को इंसुलिन निकालने के लिए प्रेरित करता है जिससे शुगर के रोगियों को अच्छा फायदा मिलता है। कैंसर जैस प्राणघातक रोग में भी इसके फायदे देखे गए हैं। चर्म रोगों में इसका बाहरी प्रयोग बहुत फायदेमंद साबित होता है। सांस की बीमारियों में गोमूत्र अर्क फायदेमंद होता है।

उपयोग की विधि और मात्रा– गोमूत्र अर्क सुबह और शाम को भूखे पेट 2 चम्मच आधा गिलास पानी में मिलाकर लेना चाहिए। इसको लेने के बाद 1 घंटे तक कुछ भी नहीं लेना चाहिए। विशेष तौर से दूध से बनी हुई कोई भी वस्तु 1 घण्टे तक नहीं लेनी चाहिए

कुल पृष्ठ–36
फरवरी 2026
प्रकाशन तिथी : 01 फरवरी 2026
कामधेनु कल्याण 20 रुपए
RNI Reg- No - RAJHIN/2022/17167
Postal Reg No: RJ/SRO/9681/2025-2027

श्रद्धानुसार गोसेवार्थ सहयोग अवश्य करें।

1. एक गोमाता की सेवार्थ गोग्रास राशि प्रतिवर्ष – रु. 21,000/–
2. हरा घास – चारा की एक गाड़ी – रु. 31,000/–
3. सूखे घास की एक गाड़ी – रु. 101,000/–
4. अक्षय भू–दान प्रति एक बीघा की राशि – रु. 2,51,000/–
5. जीवन के साथ भी जीवन के बाद भी आजीवन गोपालक बनें प्रति गोवंश – रु. 2,51,000/–
6. पौष्टिक आहार की एक गाड़ी की राशि – रु. 5,00,000/–
7. गुड़ की एक गाड़ी की राशि – रु. 4,51,000/–
8. बीमार गोवंश की दवाईयां प्रतिमाह – रु.11,00,000/–
9. पथमेड़ा द्वारा सेवित गोवंश के एक दिन का पौष्टिक आहार, हरा एवं सूखा घास चारा – रु. 51,00,000/–
10. आप अपने निवास अथवा प्रतिठान पर नियमित गोग्रास राशि दानपात्र में अर्पित कर सकते हैं।
11. अपने परिवार में जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ, उत्सव, व्रत–उपवास, पुण्यतिथि के अवसर पर सामर्थ्यानुसार सहयोग करें एवं गोमाता को अपने व्यवसाय में भागीदार बनाकर औरों को भी गोसेवा हेतु प्रेरित करें।

SHRI GODHAM MAHATEERTH PATHMEDA LOK PUNYARTH NYAS
A/C: 08490100023827, BANK OF BARODA ASHRAM ROAD AHMEDABAD,
IFSC CODE: BARB0ASHRAM (Fifth character is zero)

7742093179, 7073000151, 9760635735

www.pathmedagodham.org Godham Mahatirth pathmeda Official